मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१२, अंक-१२ मार्च २०२३ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य १००.०० रूपए

पधारो म्हारे राजस्थान

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

SANJOY KUMAR JODHANI

S/O LATE HARI SHANKAR JODHANI

(Taranagar , Churu Wale)

ESTD. 1965

SHANKAR RADIO

HOUSE OF ELECTRONICS, HOME APPLIANCES

MIRA BAZAR, PLASSEY, DIST. NADIA, WEST BENGAL, BHARAT- 741156

email : jodhani_s@yahoo.com | Mob.: 9332960333

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

पुणे
भाग ३

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय
शनिवार वाड़ा
सिंहगढ़ किला
आगाखान महल
आय. टी. पार्क हिंजवडी
वर्ल्ड ट्रेड सेंटर

दगडूशेठ हलवाई गणपती
गोडीजी जैन मंदिर
महात्मा फुले वाडा
तोरणा किला
चतुरशृंगी मंदिर
इस्कॉन एनवीसीसी मंदिर
पाताळेश्वर गुफा मंदिर
श्री बालाजी मंदिर

Remove India Name From the Constitution

India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान

Principal Conclave का आयोजन जल्द ही शिक्षा की देवी अहिल्या नगरी इंदौर में

भारतः भारत व भारतीय संस्कृति को बढावा देने हेतु 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के विश्व में फैले पदाधिकारी व कार्यकर्ता कटिबद्ध हैं, इसकी सफलता के लिए भारतीय युवाओं तक पहुंचने के लिए दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चैन्नई, झांसी आदि-आदि क्षेत्रों में Principal Conclave कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम में दिनांक ८ मार्च २०२३ को 'महिला दिवस' पर भारत का एक राज्य मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में डॉ. प्रोफेसर रेणु जैन व उनकी मातुश्री क्रांतिकारी विचारों की धनी व इतिहास की पैरोमकार कुसुमलता जैन से उनके निवास स्थल पर एक शिष्टाचार भेंट के साथ 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन व युवा राहुल जैन ने निवेदन किया कि एक कार्यक्रम युवा छात्रों के साथ 'भारत व भारतीय संस्कृति का बढावा' इंदौर में किया जाना चाहिए। प्रो. रेणु जैन ने कहा कि यह होना ही चाहिए, आज के छात्रों को भारतीय संस्कृति व भारतीयता के बारे में जानकारी दी ही जानी चाहिए। इतिहासवक्ता कुसुमलता जैन ने कहा कि हमारे प्राचीन इतिहास की जानकारी हमारे युवा छात्रों को दी जानी चाहिए। प्रो. रेणु जैन ने कहा कि २५ मार्च २०२३ के बाद हम इंदौर में एक विशाल कार्यक्रम छात्रों के साथ 'भारत व भारतीय संस्कृति का बढावा कार्यक्रम' इंदौर में करेगें, उसके पहले एक सभा का आयोजन इंदौर के Principals के साथ Conclave के माध्यम से करेगें, जिसके लिए मैं प्रो. राजीव दिक्षित से निवेदन करुंगी कि वे Principal Conclave कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी भूमिका निभाएं। इसी दिन ८ मार्च २०२३ को संध्या ५.३० बजे एक सभा का आयोजन इंदौर के आर.एन.टी. मार्ग में मधु मिलन चौराहा में स्थापित (प्रस्तुत चित्र के अनुसार) इंदौर के प्रसिद्ध समाजसेवी मॉ भारती के लाडले सांवरमल जोशी दाधीच, समाजसेवी बालकन्त राठी (माहेश्वरी) अधिवक्ता अनिल त्रिवेदी, इंदौर के प्रख्यात समाजसेवी हंसमुख गांधी, मैं भारत हूँ फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, प्रो. राजीव दिक्षित, शिक्षाविद डॉ. संगीता विनायका,

मोटिवेटर युवा उन्नित झांझरी, महर्षि दाधीच के सेवक शंकरलाल शर्मा पलोड, युवा सुशील दाधीच के साथ हैं युवा राहुल जैन।

करीब २ घंटे चली सभा में आपसी परिचय के साथ निश्चय लिया गया कि जल्द Principal Conclave का आयोजन निश्चित दिन के साथ निर्धारित कर लिया जायेगा, जिसमें इंदौर के करीब ३५० Principal उपस्थित होंगे, तत्पश्चात युवा छात्रों को 'भारत व भारतीय संस्कृति का बढावा' कार्यक्रम से जोड़ा जाएगा। जय भारत!

हिंदी भाषा शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम है- बिजय कुमार जैन

अगला विशेषांक अप्रैल २०२३

महाराष्ट्र का वस्त्रोद्योग नगर 'इचलकरंजी'

इचलकरंजी रजवाड़ा (महल)

'इचलकरंजी' पंचगंगा नदी के पास, कोल्हापुर नगर से २७ किमी दूर, जिले का दूसरा बड़ा नगर है, यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यप्रद है, परंतु कुओं का जल खारा है, अतः पेय जल नल द्वारा 'पंचगंगा' नदी से लाया जाता है। कोल्हापुर राज्य के आराध्य देव श्री वेंकटेश जी के उपलक्ष्य में यहाँ प्रति वर्ष एक बड़ा मेला लगता है, यह नगर वस्त्र उद्योग एवं वस्त्र निर्यात के लिये प्रसिद्ध है, पढें 'मैं भारत हूँ' का अगला विशेषांक अप्रैल २०२३ के मध्य में ...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान का आव्हान करने वाली विश्वस्तरीय एकमात्र पत्रिका वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक बिजय कुमार जैन द्वारा सम्पादित

मैं भारत हूँ
१३वें वर्ष में प्रवेश

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

ओंकारमल सारडा (स्व.)
प्रतिष्ठित व्यवसायी व
समाज सेवी

मदनमोहन सारडा
अध्यक्ष - राधागोविंद मंदिर,
बेहिरा पो. सेंथिया, जि. बिरभूम

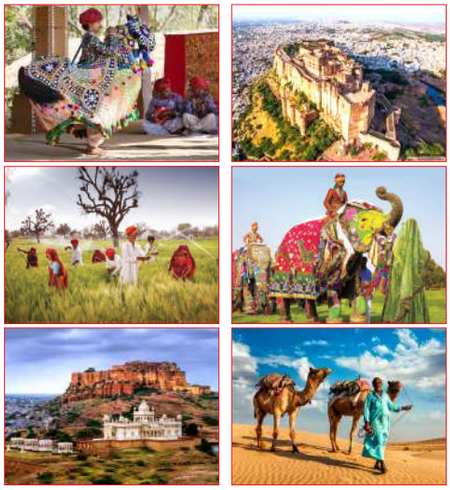

निवासी:-पो. तारानगर, जि. चूरू, राजस्थान | प्रवासी:- पो. सेंथिया, जि. बिरभूम, बंगाल

Sainthia Rice & Oil Mills

Behira, Po. Saithia, Dist. Birbhum, West Bengal, Bharat - 731234
e-mail : srom1956@gmail.com | Mob. : 9331116864/ 7001952627

मैं भारत हूँ

वर्ष -१२, अंक १२, मार्च २०२३

वार्षिक मुल्य
रु.११११/-
१२ अंकों का

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com

अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

ऐतिहासिक मंदिरों व बाजारों के साथ पुणे का भाग- 3

'मैं भारत हूँ' के प्रबुद्ध पाठकों के हाथों पुणे का इतिहास भाग- ३ प्रस्तुत करते हुए अपार खुशी के साथ मुझे भी बहुत सी जानकारियां प्राप्त हुई। पुणे के बाजारों की श्रृंखलाओं की जब जानकारी पढ़ी तो पता लगा कि सूई से लेकर विमान तक के सामान इन बाजारों में सही दर पर प्राप्त होते हैं इसलिए तो पुणे सस्ता-सुंदर-टिकाऊ शहर है, हर कोई कहता है कि 'पुणे' आ गए तो कहीं भी जाने की इच्छा ही नहीं होती।

प्रस्तुत 'पुणे' के संक्षिप्त इतिहास के साथ गुड़ी पाड़वा, रामनवमी, राजस्थान स्थापना दिवस (३० मार्च), महावीर जन्म कल्याणक (३ अप्रैल) त्यौहारों का सिलसिला चलेगा। आर्थिक रूप से नया साल १ अप्रैल से शुरू होगा।

मैं तो इतना ही कहूँगा कि त्यौहारों को मनाते हुए हम-सबका परिवार व व्यापार में खुशहाल रहे तो इससे बड़ी कोई बात ही नहीं हो सकती, यदि भारत माँ का हर लाडला यदि खुश व समृद्ध रहेगा तो विश्वास दिलाता हूँ कि वर्ष २०३० तक हम सबका 'भारत' विश्व का सिरमौर देश होगा, हम सभी अपने देश को 'भारत' ही कहेंगे और माँ भारती विश्व को कहेगी कि 'मैं भारत हूँ'।

१ अप्रैल २०२३ को 'भारत' का एक राज्य मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी, देवी श्री अहिल्या बाई की नगरी 'इंदौर' में Principal Conclave का कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय संस्थान 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के पदाधिकारियों ने आयोजन किया है जिसमें करीब २५० Principals उपस्थित रहेंगे, सभी के बीच चर्चा-परिचर्चा होगी कि किस प्रकार हमारे देश का नाम एक ही रहे 'भारत'।

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

नूतन वर्ष का अभिनंदन कराता है गुड़ी पड़वा

'गुड़ी पड़वा' मुख्य रूप से मराठी समुदाय में बड़ी ही धूमधाम से मनाया जाता है, इस पर्व को भारत के अलग-अलग स्थानों में अलग नामों से जाना जाता है। भारत के अलग-अलग प्रदेशों में इसे उगादी, छेती चांद और युगादी जैसे कई नामों से जाना जाता है, इस दिन घरों को स्वस्तिक से सजाया जाता है, जो हिंदू धर्म में सबसे शक्तिशाली प्रतीकों में से एक है। यह स्वास्तिक हल्दी और सिंदूर से बनाया जाता है, इस दिन महिलाएं प्रवेश द्वार को कई अन्य तरीकों से सजाती हैं और रंगोली बनाती हैं, माना जाता है कि घर में रंगोली नकारात्मकता को दूर करती है। 'मैं भारत हूँ' के प्रबुद्ध पाठकों को बताते हैं कि 'गुड़ी पड़वा' के इतिहास और इससे जुड़े कुछ रोचक तथ्यों के बारे में:

गुड़ी पड़वा का महत्व

'गुड़ी पड़वा' को अलग-अलग जगहों पर अलग रूपों में चिन्हित किया गया है। कई जगह इसे नए साल की शुरुआत के रूप में मनाया जाता है, ऐसा माना जाता है कि इसी दिन सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने ब्रह्मांड की रचना की थी। एक मान्यता के अनुसार सतयुग की शुरुआत भी इसी दिन से हुई थी, महाराष्ट्र में इसे मनाने का कारण मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज की युद्ध में विजय से है। माना जाता है कि उनके युद्ध में विजयी होने के बाद से ही 'गुड़ी पड़वा' का त्योहार मनाया जाने लगा। 'गुड़ी पड़वा' को रबी की फसलों की कटाई का प्रतीक भी माना जाता है।

गुड़ी पड़वा का अर्थ

'गुड़ी पड़वा' नाम दो शब्दों से बना है- 'गुड़ी' जिसका अर्थ है भगवान ब्रह्मा का ध्वज या प्रतीक और 'पड़वा' जिसका अर्थ है चंद्रमा के चरण का पहला दिन, इस त्योहार के बाद रबी की फसल काटी जाती है क्योंकि यह वसंत ऋतु के आगमन का भी प्रतीक है। गुड़ी पड़वा में 'गुड़ी' शब्द का एक अर्थ 'विजय पताका' से भी है और पड़वा का अर्थ प्रतिपदा तिथि है, यह त्यौहार चैत्र (चैत्र अमावस्या की तिथि) शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि मनाया जाता है और इस मौके पर विजय के प्रतीक के रूप में गुड़ी सजाई जाती है। ज्योतिष विद्या की मानें तो इस दिन अपने घर को सजाने और गुड़ी फहराने से घर में सुख समृद्धि आती है और पूरे साल खुशहाली बनी रहती है, यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक भी माना जाता है।

गुड़ी पड़वा का इतिहास

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार माना जाता है कि 'गुड़ी पड़वा' के दिन भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मांड की रचना की थी, इसके अलावा यह भी कहा जाता है कि इस दिन ब्रह्मा जी ने दिन, सप्ताह, महीने और वर्षों का परिचय दिया था। उगादि को सृष्टि की रचना का पहला दिन माना जाता है और इसी वजह से 'गुड़ी पड़वा' पर भगवान ब्रह्मा की पूजा करने का विधान है। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि इसी दिन भगवान श्री राम विजय प्राप्त करके वापस अयोध्या लौटे थे, इसलिए यह विजय पर्व का प्रतीक भी है।

गुड़ी पड़वा की पूजन विधि क्या है?

इस पावन दिन के अवसर पर लोग सुबह उठकर बेसन का उबटन और तेल लगाते हैं और इसके बाद वह प्रातःकाल ही स्नान करते हैं, जिस स्थान पर लोग 'गुड़ी पड़वा' की पूजा करते हैं, उस स्थान को बहुत ही अच्छी तरह से स्वच्छ एवं शुद्ध किया जाता है, इसके बाद लोग संकल्प लेते हैं और साफ किए गए स्थान के ऊपर एक स्वास्तिक का निर्माण करते हैं और इसके बाद बालों की विधि का भी निर्माण किया करते हैं।

इतना करने के बाद सफेद रंग का कपड़ा बिछाकर हल्दी-कुमकुम से उसे रंगते हैं और उसके बाद अष्टदल बनाकर ब्रह्मा जी की मूर्ति को भी स्थापित किया जाता है और फिर विधिवत रूप से पूजा अर्चना की जाती है। आखिर में लोग गुड़ी यानी की एक झंडे का निर्माण कर पूजन स्थल पर स्थापित करते हैं। **- मैंभाहूँ**

(फार्म नं.- 4 नियम 8)
अखबारों के पंजीकरण केंद्रीय नियम 1956 के नियम के तहत
'मै भारत हूँ' मुंबई के स्वामित्व और अन्य विवरण के बारे में घोषणा।
1) प्रकाशन का स्थानः- गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी- 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
2) प्रकाशन की अवधिः- मासिक
3) मुद्रक का नामः- विनय ग्राफिक्स
क्या भारतीय नागरिक हैं? - हाँ
4) सम्पादक का नामः- बिजय कुमार जैन
क्या भारतीय नागरिक है? हाँ
पताः- बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
5) इस समाचार पत्र के स्वामी व सहभागी जिनका सहभाग एक प्रतिशत से ज्यादा हो उनका नाम व पता
1) बिजय कुमार जैन
पताः- बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
2) संतोष जैन
पताः- बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
मैं बिजय कुमार जैन, गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि. के लिए घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के मुताबिक ऊपर लिखित विवरण सही है।
बिजय कुमार जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर
तारीख 19 मार्च 2023

12 SUCCESSFUL YEARS

VEG. JAIN

South AFRICA 12N | 13D

Summer '23

Rs. 2,50,000

Per Person | Incl. Air Fare, Visa, 5% GST & TCS

Luxurious Hotel Stay

01 Night PRETORIA
The Maslow Time Square
5 Star Hotel

02 Night SUN CITY
The Palace Of The Lost City
5 Star Hotel

04 Night MOSSEL BAY
Diaz Hotel & Resort
4 Star Hotel

02 Night AQUILA
The Aquila Game Reserve
4 Star Hotel

03 Night CAPE TOWN
Hotel Double Tree By Hilton
4 Star Hotel

100% Veg. & Jain

All Veg. & Jain meals made by our own Rajasthani Chef

Warm Water & all other arrangements will be done for your Rituals

Finance Available

SanKash
A REASON TO GO!

ZERO
COST EMI
INTEREST
DOWN PAYMENT

Travel Now Pay Later

Fixed Departure Dates 2023

Mar : 18
Apr : 01,15,17,29
May : 01,11,15,27,29
Jun : 10,12,24
Jul : 08,22

POORVA HOLIDAYS
THE NEW CHOICE OF TRAVEL

TEJAS SHAH
9930993825 7977628030

Sales Team : Jeet Kanani : 98772 28819 ✦ Ajinkya Deo : 96534 90528

Shop No.23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

दक्षिण अफ्रीका पर्यटन की

रिकॉर्ड तोड़ बुकिंग

की सफलता के बाद

गुजराती, कच्छी तथा राजस्थानी जैन समाज का लोकप्रिय और प्रतिष्ठीत पर्यटन संगठन

POORVA HOLIDAYS

THE NEW CHOICE OF TRAVEL

प्रस्तुत करता है

The Most Premium USA

Tour With & Without Orlando

4 Option Of Package

- 21N I 22D : Full USA With Orlando
- 18N I 19D : Full USA Without Orlando
- Only West Coast
- Only East Coast

Fixed Departure Dates

- Without Orlando
  May: 05, June: 16, July: 27
- With Orlando
  May: 26, July: 06

Stay I Place I Hotel

- 3N I San Francisco
  The Westin San Francisco Airport
- 1N I Lake Tahoe
  Hard Rock Hotel & Casino Lake Tahoe
- 1N I Mammoth Lakes
  Mammoth Mountain Inn
- 3N I Las Vegas
  Paris - Las Vegas
- 3N I Los Angeles (सिर्फ हमारे साथ)
  Sheraton Gateway Los Angeles Hotel
- 2N I Niagara Falls
  Holiday Inn Niagara Fall
- 1N I Harrisburg
  Crowne Plaza Harrisburg Hershey
- 1N I Washington DC
  Sheraton Reston
- 3N I New York
  Millennium Times Square

पूर्वा हॉलिडेज की प्रमुख विशेषताएँ

15 सालों के अनुभवी पर्यटन प्रबन्धकों के साथ
वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष सुविधाएँ
Without Orlando का विकल्प देने वाला
भारत का एक मात्र पर्यटन संगठन

अमेरिका मे भी शुद्ध शाकाहारी व जैन भोजन की
व्यवस्था हमारे राजस्थानी महाराज के द्वारा
15 सालों के अनुभवी पर्यटन प्रबन्धकों का मार्गदर्शन

संपूर्ण पर्यटन में गर्म पानी तथा अन्य उपवास की व्यवस्था
तिथि के दिनों में की जायेगी

Founder TEJAS SHAH ✆ 9930993825 ✆ 7977628030

Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

12 SUCCESSFUL YEARS

VEG. JAIN

Spiti valley

9N | 10D
Rs.99,999
Per Person

11N | 12D
Rs.1,24,999
Per Person
With Chandratal Lake & Manali

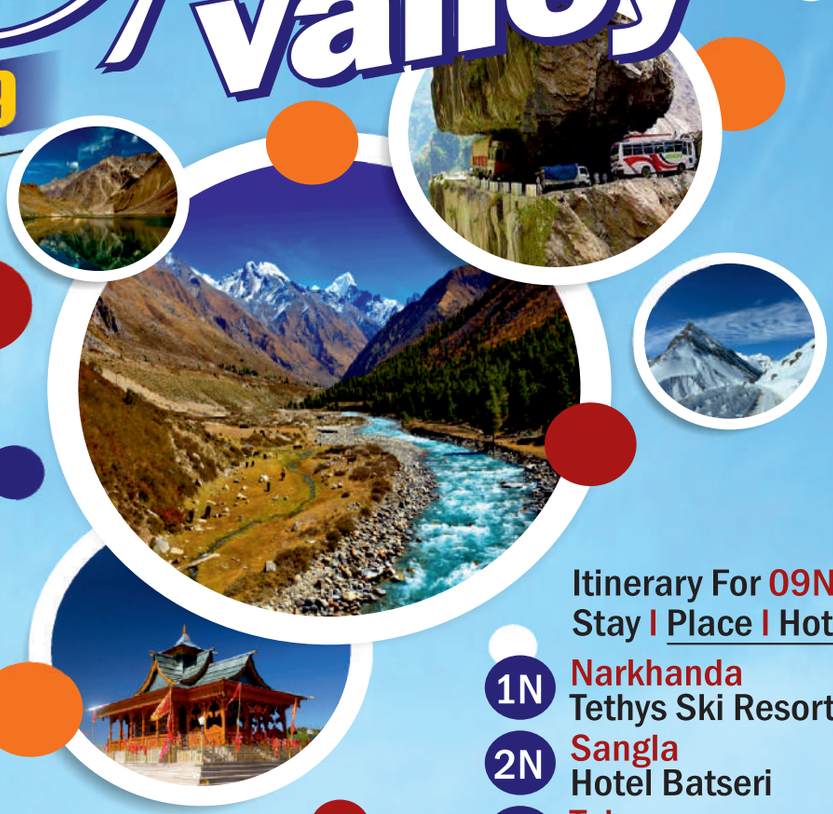

2023 Fixed Departure Date

Apr : 29
May : 10,21
Jun : 01,12,25

Warm Water & all other arrangements will be done for your Rituals

We serve all 100% Veg. & Jain Meals made by our own Rajasthani Chef

Travel Now.. Pay Later

SanKash A REASON TO GO!

Itinerary For 09N | 10D
Stay | Place | Hotel

- 1N Narkhanda — Tethys Ski Resort
- 2N Sangla — Hotel Batseri
- 1N Tabo — Hotel Maitreya Regency
- 2N Kaza — Hotel Grand Dewachen
- 1N Kalpa — Hotel Kalpa
- 2N Theog — Hotel De Exotica Crest

The prestigious Tour Company for Gujarati, Kutchi & Rajasthani Jain Tourists

POORVA HOLIDAYS
THE NEW CHOICE OF TRAVEL

Founder TEJAS SHAH ✆ 9930993825 ✆ 7977628030
Sales Team : Jeet Kanani ✆ 98772 28819 • Ajinkya Deo ✆ 96534 90528 • Kekin Heniya ✆ 95942 00634
Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम जन्मोत्सव पर विशेष

सनातन धर्म को सर्वोच्च बताने वाली भारत की भूमि हमेशा से ही एक पवित्र भूमि रही है, इतिहास के पन्नों को पलट कर देखा जाए तो यहाँ कई देवी-देवताओं के मनुष्य अवतार का वर्णन मिलता है, इसी इतिहास की ओर लौटकर देखा जाए तो जब रावण के अत्याचार बहुत बढ़ गए थे, आमजन परेशान हो गए थे, तो इन अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए पुनः भारतीय भूमि पर एक महापुरुष ने जन्म लिया, इस महापुरुष का नाम भगवान राम था, जिन्होंने विद्धान पंडित रावण के अत्याचारों से मुक्ति दिलवाई और उस वक्त लोगों का उद्धार किया। त्रेता युग में जन्में भगवान राम के जन्मदिवस को ही 'राम नवमी' के रूप में मनाया जाता है। सनातन धर्म में पूरे वर्ष कोई ना कोई त्योहार मनाया जाता है, जिनका अपना एक अलग महत्व होता है, उसी तरह से 'राम नवमी' का यह त्योहार धरती पर से बुरी शक्तियों के पतन और यहाँ साधारण मनुष्यों को अत्याचारों से मुक्ति दिलवाने के लिए भगवान के स्वयं आगमन का प्रतीक माना जाता है, इस दिन धरती पर से असुरों के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए भगवान विष्णु ने स्वयं धरती पर श्रीराम के रुप में अवतार लिया था। 'राम नवमी' सनातन धर्मियों को मानने वालों के लिए एक खास पर्व है, जिसे वह पूरे उल्लास के साथ मनाता है, इस दिन जन्में श्रीराम ने धरती पर से रावण के अत्याचार को समाप्त कर यहाँ राम राज्य की स्थापना की थी और दैवीय शक्ति के महत्व को समझाया था, इस दिन ही नवरात्रि का आखरी दिन होता है, इसलिए दो प्रमुख हिन्दू त्योहारों का एक साथ होना, इस त्योहार के महत्वता को और अधिक बढ़ा देता है। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने जिस राम चरित मानस की रचना की थी, उसका शुभारंभ भी उन्होंने नवमी के दिन से किया था।

राम जन्म अवतार इतिहास कथा : प्राचीन धर्म ग्रंथों के अनुसार त्रेता युग में जब धरती पर रावण और तड़का जैसे असुरों का आतंक का घड़ा भर गया तो स्वयं भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के अवतारों का धरती पर आगमन हुआ और इन्होंने अपने भक्तों का उद्धार किया। प्राचीन लोक कथाओं में उल्लेख मिलता है कि त्रेता युग में अयोध्या के राजा दशरथ की ३ पत्नियाँ थी, परंतु फिर भी वे संतान सुख से वंचित थे। महाराज दशरथ ने अपनी एकमात्र पुत्री शांता को गोद दे दिया था, जिसके बाद उन्हें कई सालों तक कोई संतान नहीं हुई, इससे व्यथित राजा दशरथ को ऋषि वशिष्ठ ने कामेष्ठि यज्ञ करवाने की आज्ञा दी, इस यज्ञ के फलस्वरूप राजा दशरथ के यहाँ तीनों रानियों को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और उनकी प्रथम पत्नी कौशल्या की कोख से भगवान राम का जन्म हुआ, राजा दशरथ के तीन अन्य पुत्र भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे।

राम नवमी क्यों मनाते हैं?

त्रेता युग में लोग रावण नामक राक्षस के दुराचार से लोग परेशान हो गए थे, रावण महाज्ञानी था और महापराक्रमी होने के साथ ही वह भगवान शिव का महाभक्त भी था, उसे वरदान था कि उसका खात्मा किसी साधारण मनुष्य के वश में नहीं था, तब लोगों को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलवाने के लिए भगवान विष्णु ने स्वयं धरती पर अवतार लिया, उनका जन्म चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन रानी कौशल्या की कोख से हुआ था, इसलिए यह दिन सभी भारत वासियों के लिए खास है, जिसे विशेष उत्साह के साथ पूरे देश में मनाया जाता है।

रावण का वध करना श्री राम के पूजन का कारण नहीं है, बल्कि श्री राम का पूरा जीवन ही एक उदाहरण है, अपने जीवन चरित्र के चलते श्री राम मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाए, आपने अपने पिता के एक आदेश मात्र पर, महल के सुख का त्याग कर वन जीवन को स्वीकार किया, इस प्रकार आपके जीवन को एक आदर्श जीवन के रूप में प्रस्तुत करना और आने वाली पीढ़ियों तक यह संदेश पहुंचाना भी इस दिन को मनाने का एक उद्देश्य है।

राम नवमी कैसे मनाई जाती है :

'श्रीराम नवमी' भगवान राम के जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाती है, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, यह त्योहार चैत्र माह की नवमी तिथि के दिन पड़ता है, चैत्र माह में माता दुर्गा के नौ रुपों का पूजन किया जाता है, इसी दौरान नवरात्रि के नौवे दिन राम नवमी होती है, हिन्दू धर्म में इस दिन विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का पाठ, हवन पूजन, भजन आदि किया जाता है, इस दिन कई लोग शिशु रूप में भगवान राम की मूर्ति पूजा भी करते है, दक्षिण भारतीय लोग इस पर्व को भगवान राम और देवी सीता की शादी की सालगिरह के रूप में मानते है, परंतु रामायण के अनुसार अयोध्यावासी पंचमी के दिन इनका विवाहोत्सव मनाते हैं।

अलग-अलग क्षेत्रों में इस त्योहार को मनाने का तरीका भी अलग-अलग है, जहां अयोध्या और बनारस में इस दिन गंगा और सरयू में स्नान के बाद डुबकी लगाई जाती है और भगवान राम, सीता और हनुमान की रथ यात्रा का आयोजन किया जाता है, वहीं अयोध्या, सितामणि, बिहार, रामेश्वरम आदि जगहों पर चैत्र पक्ष की नवमी पर भव्य आयोजन किए जाते हैं, यह दिन सभी सनातन धर्मावलम्बियों के लिए खास होता है, बस सबके मनाने का तरीका अलग होता है। कई जगहों पर इस दिन पंडालों में भगवान राम की मूर्ति की स्थापना भी की जाती है, यह दिन भगवान राम की जन्म स्थली अयोध्या में विशेष रूप से मनाया जाता है, यहाँ भव्यतिभव्य भगवान राम के मंदिर का निर्माण चल रहा है।

राम का जन्म अभिजित नक्षत्र में दोपहर बारह बजे चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी को हुआ था, कई जगहों पर इस दिन सभी भक्तजन अपना चैत्र नवरात्री का उपवास दोपहर १२ बजे पूर्ण करते हैं, घरों में खीर-पुड़ी और हलवे का भोग बनाया जाता हैं, कई जगहों पर राम स्त्रोत, राम बाण, अखंड रामायण आदि का पाठ होता है, रथ यात्रा निकाली जाती हैं, मेला सजाया जाता हैं।

पूजा सामग्री और पूजन विधि : पौराणिक भारतीय मान्यता के अनुसार भगवान राम सूर्य के वंशज थे, इसलिये यह दिन सूर्योदय के साथ ही सूर्य को जल अर्पण कर शुरूआत की जाती है, इतना ही नहीं इस दिन कई जगहों पर लोग अखंड रामायण का पाठ भी करते हैं और राम जन्म के समय उनकी मूर्ति का विशेष अभिषेक कर उन्हें तिलक सामग्री अर्पित की जाती है, फिर उन्हें धूप आदि लगाकर उन्हे भोग अर्पित किया जाता है। **- मैंभाहूँ**

एक भाषा की वजह से एकता को सफलता मिल सकती है, वह हिन्दी ही है - बिजय कुमार जैन

SINCE 2011

POORVA HOLIDAYS

THE NEW CHOICE OF TRAVEL

गुजराती, कच्छी तथा राजस्थानी जैन समाज का
लोकप्रिय और प्रतिष्ठीत पर्यटन संगठन

Avail
06N | 07D
08N | 09D
03 Packages

Gold
Diamond
Diamond Plus

06 N / 07 D

08 N / 09 D

Leh Ladakh

Travel Now .. Pay Later

SanKash A REASON TO GO!

- No Cost EMI
- Zero Interest
- Zero Down Payment

चोवियार, एकासना, बेसना, गर्म पानी की व्यवस्था तिथि के दिनों में करके मिलेगी

संपूर्ण पर्यटन मे हमारे महाराज के हाथ का 100% शाकाहारी व जैन भोजन मिलेगा

Choice of ..

Different Packages
as per Luxurious Hotels,
Departure Dates & Budget ..

1N	Sonmarg
1N	Kargil
2N	Leh
2N	Nubra Valley
1N	Pangong Lake
1N	Leh

8N | 9D

2023 Fixed
Departure Dates & Itinerary

Gold Pkg :
May : 06,08,14,20,22,28,30
Jun : 05,07,13,15,21,23,29
Jul : 01,07,09,15,17,23,25,31
Aug : 06,12,18,24

Diamond Pkg :
May : 20,28
Jun : 05,13,21,29
Jul : 07,15,23,31

Diamond Plus Pkg :
May : 22,30
Jun : 07,15,23
Jul : 01,09,17,25

MR. TEJAS SHAH FOUNDER : ✆ 99309 93825 ✆ 79776 28030

Sales Executive Team : Kekin Heniya ✆ 95942 00634 • Swati Jain ✆ 91794 95667

QUALITY HOTEL · PERSONAL ATTENTION

Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E),
Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

VEG JAIN · SIGHT SEEING

पुणे भाग- ३

क्या नहीं है महाराष्ट्र के एक जिले पुणे में सपरिवार ऐतिहासिक स्थल का दौरा करें

'पुणे' दुकानदारों के लिए स्वर्ग है। पैठनी साड़ी, महाराष्ट्रीयन नथ, कोल्हापुरी चप्पल, चांदी और पीतल के बर्तन से लेकर सस्ते परिधान और सामान तक 'पुणे' में खरीदारी बहुत ही मजेदार होती है। खाने के शौकीनों के लिए यहां भाकरवड़ी, आम की बर्फी, पूरन पोली, तरह-तरह के चिवड़ा और दूसरे मसाले हैं, ये इस जीवंत शहर से अद्भुत स्मृति के रूप में जुड़े हैं।

डेक्कन रोड 'पुणे' में खरीदारी के लिए जगह है। बैग, किताबें और मोबाइल स्टोर जैसे सामान इस जगह पर मिलते हैं। यहां की दुकानें मोबाइल फोन से सजी हुई हैं, साथ ही धूप के चश्मे, टोपी और पर्स से भी सजी हैं। आपको पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के लिए बहुतायत में बिकने वाले बैग के साथ सभी आकार और डिजाइन की टोपियां मिलेंगी, यहां उपलब्ध फुटवियर की दुकानें भी हैं।

महात्मा फुले मंडई

ज्वैलरी के दीवाने निश्चित रूप से यहां कम कीमतों पर उपलब्ध इयरिंग्स, नेकलेस के विकल्पों की संख्या को लेकर गदगद हो जाते हैं। हॉगकॉग लेन में मिलने वाली अन्य वस्तुएं घड़ियां, चमड़े की बेल्ट इत्यादि हैं, दैनिक जीवन में काम में लाने के लिए यह एक आदर्श स्थल है।

महात्मा फुले मंडई

हर शुक्रवार महात्मा फुले मंडई थोक मूल्यों पर फलों और सब्जियों की खरीदारी के लिए एक उत्कृष्ट स्थल है। यह स्ट्रीट-फेरीवालों बाइक और कारों पर बेचने वाले विक्रेताओं से सजा हुआ स्थान है, करीब ५३० स्टॉल हैं, इसके अलावा यदि आप एक पशु प्रेमी हैं और एक पालतू जानवर की तलाश कर रहे हैं तो 'पुणे' का यह बाजार उत्तम है। मंडई में सूखे मेवे, मसालों और अन्य किराने की वस्तुओं की दुकानें हैं, यहां आयातित स्नैक्स और चॉकलेट भी मिलते हैं, यहां इत्र और सौंदर्य प्रसाधनों की दुकाने भी हैं, अगर आप यहां फल और सब्जियां लेने के लिए आए हैं तो सुबह के समय यहां आना उचित है।

फैशन स्ट्रीट

'पुणे' में खरीदारी के लिए लोकप्रिय जगहों में से एक फैशन स्ट्रीट आपको कम कीमत पर अलमारी का मेकओवर देगी, यहाँ कपड़े सस्ते मिलते हैं। मुंबई की तरह ही यह भी भीड़भाड़ वाली संकरी गलियां फैशन कैनोपी के तहत सब कुछ मिलता हैं, यहां उचित मूल्य पर विभिन्न कीमतें **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से ... पर हर जीवनोपयोगी समान मिल सकता है।

भवानी पेठ आपके सभी पसंदीदा ब्रांडों का एक उत्कृष्ट स्थान है। बजट के अनुकूल, सुविधाजनक और सस्ती दरों पर सभी सामानों के साथ लगभग ४५० दुकानें हैं, जो 'पुणे' के रहवासियों की जरूरतों को पूरा करते हैं।

तुलसी बाग

तुलसी बाग 'पुणे' के मध्य में है और स्ट्रीट शॉपिंग के लिए स्वर्ग है। रेडीमेड गारमेंट्स के लिए बेहद मशहूर, आपको यहां कस्टमाइज्ड फिटिंग्स के लिए दुकानों की कतारें मिलेंगी, यह दिल्ली के चांदनी चौक की तरह 'पुणे' में खरीदारी के लिए सबसे पुराने बाजारों में से एक है। खरीदारी का माहौल अलका टॉकीज चौक से शुरू होता है और छावनी क्षेत्र के पास समाप्त होता

है। जींस हो, ब्लाउज़, शर्ट या एसेसरीज विभिन्न रंगों में उपलब्ध होते हैं।

बाजीराव रोड

यह क्षेत्र आपके घर और फर्नीचर की सभी जरूरतों को पूरा करता है। बाजीराव रोड सभी होम डेकोर के जरूरतों के लिए उपयुक्त है, यदि आप बजट पर होम-मेकओवर की तलाश कर रहे हैं, यह जगह उच्च श्रेणी के फर्नीचर ब्रांडों के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा के साथ है, यह स्व-डिज़ाइन किए गए फ़र्नीचर के लिए एकदम सही जगह है, जहाँ वाणिज्यिक फ़र्नीचर आकर्षक कीमतों पर बेचा जाता है, यहां की दुकानें पुरम चौक तक फैली हुई हैं और शनिवार वाडा पैलेस पर समाप्त होती हैं।

जूना बाजार

यदि आपको प्राचीन, विशिष्ट प्राचीन वस्तुओं को एकत्रित करने का शौक है,

तो यह स्थान आपके लिए है, इसे ओल्ड मार्केट और चोर बाजार भी कहा जाता है। 'पुणे' का एक लोकप्रिय खरीदारी स्थल है। आपको अविश्वसनीय कीमतों पर हार्डवेयर उपकरण, नाजुक आभूषण, कपड़े और सौंदर्य प्रसाधन और जंक सामान के दोनों तरफ पंक्तिबद्ध टेंट मिलेंगे। **शेष पृष्ठ १४ पर...**

शामसुंदर सीताराम कलंत्री

भ्रमणध्वनि: 9422079822/7559115654

अध्यक्ष : सीताराम गणेशराम कलंत्री चेरिटेबल ट्रस्ट
उपाध्यक्ष : भा. ज. पा. व्यापारी आघाडी, पुणे शहर
विश्वस्त : महेश सांस्कृतिक भवन, पुणे
विश्वस्त : महेश सेवा संघ, पुणे

टी.डी. आर. (T.D.R.) खरेदी-विक्रीसाठी पुण्यातील विश्वसनीय नाव

ऑफिस:- नं. 4, वास्तुश्री कॉम्प्लेक्स (हाईड पार्क), अे विंग,
मार्केट यार्ड जवळ, पुणे, महाराष्ट्र, भारत-411037
फोन: 020-29998852 | E-mail:- shamkalantri@gmail.com

भारत का प्रसिद्ध पर्यटन क्षेत्र 'पुणे' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

भगवान माहेश्वरी चौक, सांगवी, पुणे

Satish Goverdhan Lohiya
President -Sangvi Parisar Mahesh Mandal
Mob. : 9823138867

पृष्ठ १३ से ... बाजार पुरानी कलाकृतियों, प्राचीन हस्तशिल्प, पीतल की मूर्तियों, चित्रों आदि की ओर अधिक उन्मुख है। टाइपराइटर, सिक्के, टेलीस्कोप, विनाइल रिकॉर्ड, संगीत वाद्ययंत्र, चित्र और पोस्टर आपको यहां मिल सकते हैं।

फर्ग्यूसन कॉलेज रोड

एफ.सी. रोड एक कॉलेज क्राउड हॉटस्पॉट है, शायद पुणे में खरीदारी के लिए सबसे जीवंत क्षेत्रों में से एक है। यहाँ कपड़ों की कीमतें सही हैं। झुमके और बैग यहाँ विभिन्न रूप में मिलते हैं, इसके अलावा आप यहां उपलब्ध पोशाकों की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। शहर के मध्य में स्थित इस बाजार में ट्रेंडी फुटवियर से लेकर आकर्षक ड्रेस तक सब कुछ उपलब्ध होते हैं जो निश्चित रूप से आपको खुश कर देते हैं। अगर आप थोक में सामान खरीदते हैं तो आपको अच्छी खासी छूट मिल सकती है।

छत्रपति संभाजी नगर

लोकप्रिय रूप से डेक्कन जिमखाना के रूप में जाना जाता है, यह एक छोटे पैमाने का बाजार है यहाँ बहुत सारी दुकानें मुख्य रूप से चमड़े के उत्पाद बेचते हैं। यह 'पुणे' में खरीदारी के लिए वन-स्टॉप डेस्टिनेशन है और विशेष रूप से पारंपरिक मिठाइयों, फूलों और उपहार की वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है।

क्लोवर सेंटर

एमजी रोड की यह जगह 'पुणे' में असाधारण रूप से किफायती खरीदारी का

अनुभव प्रदान करती है। ज्वैलरी और एसेसरीज की उपलब्धता वैरायटी के रूप में है। कढ़ाई वाली जूतियों से लेकर डेनिम बैकपैक्स, टेलर्स, कस्टमाइज्ड फिटिंग तक सब कुछ आपके लिए यहां है, एक ही परिसर में असंख्य दुकानों का केंद्र है।

एबीसी, पुणे

अप्पा बलवंत चौक, जिसे 'एबीसी' भी कहा जाता है जो कि सभी पुस्तक प्रेमियों के लिए है। विस्तृत मूल्य श्रेणियों के साथ स्टेशनरी की दुकानों में आवश्यक सभी चीजें उपलब्ध हैं, इस स्थान में शैक्षिक, काल्पनिक, गैर-काल्पनिक और अन्य सभी श्रेणियों की पुस्तकें शामिल हैं, यहां की दुकानों में नई, पुरानी और पुन: उपयोग की गई किताबें मिलती हैं, यहाँ वह सब कुछ है जो एक पुस्तक प्रेमी को चाहिए। किताबों के अलावा यहां जूते, स्कूल बैग, ट्रेवल बैग, चटाई आदि भी मिलते हैं।

लक्ष्मी रोड

शहर के पुराने हिस्से में स्थित लक्ष्मी रोड लगभग 'पुणे' के दिल की तरह है। 'पुणे' के सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध बाजारों में से एक, यहां पारंपरिक सामानों जैसे पैठनी साड़ियां, रेशम साड़ियां, डिजाइनर साड़ियां आदि के लिए प्रसिद्ध है। हालांकि खरीदारी के लिए सभी के लिए कुछ न कुछ उपलब्ध है। आप यहां ३० रुपये से भी कम में भव्य बालियां पा सकते हैं, वहीं दूसरी ओर आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए चमकते बनावटी हीरे और सोने के आभूषण भी मिलते हैं। फुटवियर से लेकर मेकअप और यहां तक की ब्यूटी एसेंशियल तक आप यहां अपनी जरूरत की लगभग हर चीज पा सकते हैं। कुछ स्वादिष्ट स्नैक्स सड़क किनारे खाना भी ना भूलें।

एम.जी. रोड

महात्मा गांधी रोड या एम.जी. रोड, जैसा की यह स्थानीय 'पुणे' में प्रमुख खरीदारी स्थानों में से एक है। यह वास्तव में विविध और जीवंत बाजार है, जिसमें एक ओर कुछ बेहतरीन मॉल हैं और दूसरी ओर तेज स्मार्ट स्ट्रीट है। आप यहां अपने दिल की खुशी के लिए खरीदारी कर सकते हैं, आप यहां सुंदर झुमके, जूते या स्कार्फ लेना न भूलें। कयानी बेकरी से प्रसिद्ध बुधनी वेफर्स और केक, चिप्स के बैग, इसके अलावा, मार्ज़-ओ-रिन, पाश्चर, जॉर्ज रेस्तरां जैसे आकर्षक स्थानीय भोजनालयों में से किसी एक में खाने के लिए कुछ समय बचा कर रखें।

कोरेगांव पार्क

शहर के सबसे जीवंत और विश्वव्यापी क्षेत्रों में से एक कोरेगांव पार्क या केपी को खरीदारी करने के लिए जाना जाता है, यह एक समकालीन और ऑफ-द-रनवे फैशन है जिसकी आप तलाश कर रहे हैं, तो आप सही जगह पर आए हैं, इसमें कपड़े, सामान, जूते, बैग और कई अन्य उपहार बेचने वाले कुछ स्टोर हैं जो आपको भीड़ में अलग कर देंगे, इसके अलावा यहां कुछ भोजनालयों में विश्व व्यंजनों का आनंद लेने के लिए यह निश्चित स्थान भी है, साथ ही कई वाटरिंग होल और लाउंज में से एक में नाइटलाइफ़ का आनंद लेने के लिए यह कोरेगांव पार्क, घोरपदी, पुणे में स्थापित है।

अगर स्ट्रीट शॉपिंग आपको उत्साहित नहीं करती तो चिंता ना करें। 'पुणे' में कुछ बेहतरीन मॉल भी हैं। आप फीनिक्स मार्केट सिटी या ई-स्क्वायर मॉल भी जा सकते हैं। अमनोरा मॉल, एसजीएस मॉल और इनॉर्बिट मॉल भी सबसे अधिक भीड़ खींचने वाले मॉल हैं। दोराबजी की रोयल हेरिटेज और सीज़न्स मॉल लोगों के लिए स्वागत योग्य है। 'पुणे' में अन्य मॉल पुणे सेंट्रल मॉल, न्यूक्लियस मॉल और सिटी वन मॉल है।

पार्वती हिल मंदिर

१७ वीं शताब्दी में महान पेशवा शासक बालाजी बाजी राव द्वारा निर्मित किया

गया २,००० फीट से अधिक ऊँचा, पार्वती पहाड़ी 'पुणे' शहर का एक व्यापक दृश्य प्रस्तुत करती है, यह 'पुणे' के दक्षिण- **शेष पृष्ठ १५ पर...**

पृष्ठ १४ से... पूर्व भाग में स्थित है। शहर की भाग-दौड़ से दूर यह पहाड़ी अपने आप में खूबसूरत नज़ारे दिखाती है, यहाँ साल भर सुहावना मौसम रहता है। यहां कई देवताओं-भगवान शिव, देवी पार्वती, भगवान विष्णु, देवी रुक्मिणी और भगवान विट्ठल और भगवान विनायक के मंदिर हैं। पार्वती मंदिर, हालांकि, देवी पार्वती और भगवान शिव को समर्पित है।

पहाड़ी पर १०३ पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़कर पहुँचा जा सकता है जो मूल रूप से हाथियों को पहाड़ी से चढ़ने और उतरने के लिए डिज़ाइन की गई थीं। शीर्ष पर पहुंचने में किसी को १० मिनट से ज्यादा का समय नहीं लगता। पार्वती पहाड़ी के ऊपर विश्राम, जो कि एक काले पत्थर की संरचना के साथ है। पार्वती मंदिर चार अन्य मंदिरों, पेशवा संग्रहालय और पानी की टंकी के साथ है। पार्वती मंदिर कई स्थानीय नागरिकों के लिए एक दैनिक यात्रा स्थल है। यह 'पुणे' का उच्चतम बिंदु है।

पातालेश्वर गुफा मंदिर

'पुणे' में जंगली महाराज रोड पर स्थित पातालेश्वर गुफा मंदिर जो भगवान शिवजी का एक रूप है। एक ही विशाल चट्टान से उकेरी गई मंत्रमुग्ध कर देने वाली अखंड सोच शहर के बीचों-बीच स्थित है, यह एक श्रद्धेय मंदिर है, जहाँ प्रतिदिन सैकड़ों भक्तों और तीर्थयात्रियों का आना-जाना लगा रहता है। मंदिर की दीवारों और लघु चित्रों पर विस्तृत नक्काशी के साथ शानदार वास्तुकला अंकित है। भगवान शिव के अलावा मंदिर नंदी को भी समर्पित है, इसमें भगवान राम, सीता, लक्ष्मी, लक्ष्मण, गणेश आदि अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं। मंदिर का निर्माण राजसी एलिफेंटा गुफाओं से प्रेरित है, पर यह अधूरा रह गया था, इसी कारण से मंदिर का कोई वास्तविक प्रवेश द्वार नहीं है। एकमात्र मुख्य प्रवेश द्वार आंगन में एक बरगद के पेड़ के बगल में है। मंदिर का रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा किया जाता है।

देहु

'देहु' गाथा मंदिर सबसे बड़े मंदिरों में से एक है और 'पुणे' के पास स्थित है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर संत तुकाराम महाराज की मूर्ति है, जो लोगों को

सबसे ज्यादा आकर्षित करती है। मंदिर की दीवारों पर सभी गाथाओं यानी संत तुकाराम की कथाओं/कथाओं की नक्काशी जो पढ़ने में बहुत आसान है। कहा जाता है कि मंदिर में दर्शन करने पर कम से कम ३ गाथाएं जरूर पढ़नी चाहिए, यह मंदिर इंद्रायणी नदी के तट पर स्थित है। **शेष पृष्ठ १६ पर...**

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

मनोहर सारडा
मो. :- 9325051555
थर्ड लाईन, कृषी उत्पन्न बाजार समिती मार्केट यार्ड,
११२ मार्केट यार्ड, सांगली, महाराष्ट्र, भारत-४१६४१६

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Bijay Kumar Kishorepuria
Mob. : 92346 67111
BMW Ventures Ltd
1st Floor, Mona Cinema Complex,
East Gandhi Maidan,
Patna, Bihar-800004
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १५ से... 'देहू' एक आध्यात्मिक स्थान है जहाँ संत तुकाराम का जन्म हुआ था। यह तीर्थयात्रियों का स्थान है। संत तुकाराम का मंदिर १७२३ में 'देहू' में बनाया गया था। कहा जाता है कि जिस घर में वे निवास करते थे वह आज भी अस्तित्व में है। 'देहू' के मुख्य आकर्षणों में से एक महीने आषाढ़ में पालकी का जुलूस निकलता है। हर साल इस जुलूस के दौरान, कई लोग भाग लेते हैं और संत तुकाराम की गाथाओं को याद करते हैं और गीत गाते हैं। संत तुकाराम के अनुयायियों के लिए यह स्थान अत्यधिक पूजनीय है। तुकाराम की पत्नी के नाम एक उद्यान भी समर्पित है, उनके १३ दिनों के उपवास के उपलक्ष्य में चट्टान का निर्माण किया गया था।

श्री बालाजी मंदिर

'पुणे' का श्री बालाजी मंदिर तिरुपति, तिरुमाला में प्रसिद्ध वेंकटेश्वर मंदिर की एक प्रतिकृति है। न केवल वास्तुकला और गर्भगृह देवता का रूप, मंदिर

अनुष्ठानों और धार्मिक गतिविधियों का अनुसरण करता है। सुंदर, हरे-भरे परिवेश, मुफ्त भोजन और शांत वातावरण के साथ, श्री बालाजी मंदिर उन लोगों के लिए एक बढ़िया विकल्प है जो मूल स्थान की यात्रा नहीं कर सकते।

इस्कॉन एनवीसीसी मंदिर, पुणे एक अवलोकन

इस्कॉन एनवीसीसी (नया वैदिक सांस्कृतिक केंद्र) पुणे के पास कोंढवा के कम

भीड़भाड़ वाले इलाके में स्थित है। इस्कॉन एनवीसीसी भगवान कृष्ण और देवी राधा को समर्पित एक मंदिर है। मंदिर की पृष्ठभूमि में हरे-भरे पहाड़ हैं और यह अपने आगंतुकों को एक शानदार माहौल प्रदान करता है। एक बार जब आप प्रार्थना कक्ष में प्रवेश करते हैं तो आप भगवान कृष्ण और देवी राधा की आश्चर्यजनक मूर्तियों देख चकित हो जाएंगे। मूर्तियों को सुंदर परिधानों और रंग-बिरंगी मालाओं से सुशोभित किया गया है। गुंबद की छत और मंदिर की दीवारों को रंगीन चित्रों से कलात्मक रूप से सजाया गया है। मंदिर में राधा, कृष्ण और बलराम का निवास स्थान होने के अलावा युवा प्रशिक्षण कार्यक्रम और भगवत गीता पढ़ने की कक्षाएं, महिला और परिवार सशक्तिकरण गतिविधियाँ होती हैं।

'इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शियसनेस' संक्षिप्त रूप में इस्कॉन, जिसे आमतौर पर 'हरे कृष्ण आंदोलन' के रूप में भी जाना जाता है, एक आध्यात्मिक संगठन है जिसे ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद द्वारा जुलाई १९६६ में न्यूयॉर्क में स्थापित किया गया था। इस्कॉन वैदिक शास्त्रों और वेदों की स्कूली शिक्षा से मेल खाता है, जिसमें भगवद-गीता और श्रीमद भागवतम शामिल हैं। ये पवित्र शास्त्र 'वैष्णववाद' या भगवान कृष्ण की सेवा सिखाते हैं।

चतुरश्रृंगी मंदिर

'पुणे' के श्रद्धेय मंदिरों में से चतुरश्रृंगी मंदिर जब आप 'पुणे' में हों तो आपके घूमने के स्थानों की सूची में होना चाहिए। गोखले नगर में 'पुणे' विश्वविद्यालय के पास सेनापति बापट रोड पर स्थित यह मंदिर युगों-युगों से महाकाली और

श्री चतुरश्रृंगी के भक्तों का स्थान रहा है। 'चतुरश्रृंगी' शब्द 'चट्टू' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है 'चार चोटियों वाला पर्वत' यह विश्वास और शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। मुख्य मंदिर में देवी दुर्गा, अष्टविनायक और गणेश की मूर्तियाँ भी शामिल हैं।

मंदिर ९० फीट ऊंचे और लगभग १२५ फीट चौड़े ढलान पर स्थित है, इसकी देखभाल चतुरश्रृंगी मंदिर ट्रस्ट द्वारा की जाती है। २०१३ में, बुजुर्गों और शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के लिए मंदिर तक १०० कदम की सुगम यात्रा को सक्षम करने के लिए मंदिर के लिए एक रोपवे का प्रस्ताव किया गया था, इस प्रस्ताव को चैरिटी कमिश्नर के अधिकारी ने कई बार खारिज कर दिया, अब मंदिर ट्रस्ट ने एस्केलेटर बनाने का फैसला किया है। चतुरश्रृंगी मंदिर न केवल भारत में सबसे बड़े और प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है, बल्कि यह सैकड़ों भक्तों द्वारा दर्शन किए जाने वाले सबसे पवित्र स्थानों में भी एक है।

भुलेश्वर मंदिर, पुणे विवरण

प्राचीन इतिहास और अनूठी वास्तुकला से समृद्ध, भुलेश्वर मंदिर भगवान शिव को समर्पित एक पवित्र स्थल है और महाराष्ट्र के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव 'यवत' में एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित यह मंदिर 'पुणे' शहर से लगभग ५४ किमी दूर स्थित है। मंदिर का शांत और ठंडा वातावरण भक्तों को प्रार्थना करने के लिए एक शांतिपूर्ण अनुभव प्रदान करता है। मंदिर की दीवारों पर दिखाई देने वाली शास्त्रीय पत्थर की नक्काशी मंदिर को एक प्राचीन और ऐतिहासिक बनाती है। पूरे महाराष्ट्र और पड़ोसी क्षेत्रों के भक्त मंदिर में आते हैं। यह ऐतिहासिक **शेष पृष्ठ १७ पर...**

पृष्ठ १६ से ... शोधकर्ताओं और प्राचीन-वास्तुकला के प्रति उत्साही लोगों द्वारा भी देखा जाता है।

मंदिर में भक्तों के कई उदाहरण हैं जो ५ पेढ़ों के बारे में प्रसिद्ध लोक-कथा की पुष्टि करते हैं, जब शिव लिंग पर ५ पेढ़ों (मिठाई) का एक कटोरा चढ़ाया जाता है, तो एक पेढ़ा गायब हो जाता है। मंदिर पांच शिवलिंगों के लिए एक पवित्र स्थल है, इसमें भगवान विष्णु, देवी लक्ष्मी और भगवान महादेव की मूर्तियां भी हैं। स्त्री वेश में भगवान गणपति का एक देवता भी है जिसके कई नाम हैं जैसे गणेशवरी या लंबोदरी या गणेशयानी। सलाह दी जाती है कि आप मंदिर जाने से पहले कुछ आवश्यक सामान जैसे पानी और कुछ स्नैक्स पैक कर लें क्योंकि मंदिर के आसपास कोई भी बाजार नहीं है। मंदिर से लगभग १५ किमी दूर नारायणबेट है, एक पहाड़ी जहां गर्मियों के दौरान पक्षी प्रवास करते हैं। मंदिर का पौराणिक महत्व है क्योंकि कहा जाता है कि यह वह स्थान था जहां देवी पार्वती शादी करने के लिए कैलाश पर्वत जाने से पहले भगवान शिव के लिए यहीं पर नृत्य करती थीं।

कात्रज जैन मंदिर, पुणे

पूजा के इस प्रमुख स्थान कात्रज जैन मंदिर में शांति और शांति दो सबसे प्रमुख

शक्तियाँ हैं। यह मंदिर महाराष्ट्र के पुणे जिले के कात्रज में पुणे-सतारा राजमार्ग के बीच स्थित एक पहाड़ी पर स्थित है। 'पुणे' शहर को मंदिर से मनमोहक दृश्य आगंतुकों द्वारा शांति की भावना को जोड़ता है। एक बार मंदिर में प्रवेश करने के बाद ताज़ा हवा आपको तन्दुरूस्त बनाती है। मंदिर की सुंदरता, शांति और जैन धर्म की प्राचीनता, धर्म साहित्य के प्रति इसकी सराहना की जाती है। मंदिर ज्यादा पुराना नहीं है क्योंकि इसे २०वीं सदी में बनाया गया था। स्थानीय लोगों के बीच इसका दूसरा नाम 'आगम मंदिर' भी प्रसिद्ध है।

मंदिर परिसर के आसपास कई छोटे मंदिर हैं, एक जल मंदिर है। मुख्य मंदिर में तीर्थंकर महावीर की मूर्ति विराजमान है, जो पंचधातु से बनी है। मंदिर में मूर्ति की ऊंचाई १२ फीट और वजन ५ टन है। मंदिर के बाहरी गर्भगृह में सभी ४८ आगम खुदे हुए हैं जो कि लोगों के पढ़ने, समझने और सीखने के लिए हैं। मंदिर परिसर में अन्य मूर्तियाँ हैं उनमें से एक तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति है जो धातु-मिश्रण से बनी है। मंदिर में आधुनिक सुविधाओं के साथ एक धर्मशाला और एक भोजनालय भी है। आवास की सुविधा उपलब्ध है। परिसर में एक गोशाला भी है।

श्री ओंकारेश्वर मंदिर

सनातन धर्मियों के लिए एक अंतिम संस्कार स्थल श्री ओंकारेश्वर मंदिर बालगंधर्व रंग मंदिर, शनिवार पेठ के पास स्थित १८ वीं शताब्दी का शिव

मंदिर है। मंदिर का निर्माण शिवराम भट्ट ने करवाया था जो पुणे में रहने वाले प्रसिद्ध पेशवा परिवार के आध्यात्मिक गुरु थे। मंदिर का शिखर सफेद पत्थर से ५ परतों द्वारा बना है। प्रत्येक परत में सनातन धर्म में विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां और नक्काशियां हैं। मंदिर का मुख्य द्वार नंदी महाराज की मूर्ति की ओर है, जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने पानशेत जलप्रलय के दौरान लोगों की मदद की थी। मंदिर के मुख्य गर्भगृह में एक **शेष पृष्ठ १८ पर...**

भारत का प्रसिद्ध पर्यटन क्षेत्र 'पुणे' के प्रकाशन पर को हार्दिक शुभकामनायें

रक्तदान श्रेष्ठदान
रक्ताचे नाते
चॅरिटेबल ट्रस्ट
राम बांगड़
संस्थापक अध्यक्ष
भ्रमणध्वनि: ९४२२०८५९२४
कहीं भी, कभी भी,
कुछ भी सिर्फ मेरे देश के लिए।
637/39, Khadakmalali,, Ghorpade Peth, Pune, Maharashtra, Bharat-411042

भारत का प्रसिद्ध पर्यटन क्षेत्र 'पुणे' के प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनायें
RAMGOPAL P. CHANDAK
M.Com., LL.B.
Mob. : 9422000851
Taxation Consultant
The Real Estate People
2, Paraj Apartments, 205, Shaniwar Peth, Near Shaniwar Peth Police Chowky, Pune - 411030

पृष्ठ १७ से ... शिवलिंग है, इसके अलावा मंदिरों में गणेश, विष्णु, शनि जैसे विभिन्न देवताओं की मूर्तियाँ हैं। मंदिर इसलिए भी जाना जाता है क्योंकि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई राजनीतिक नेताओं ने ओंकारेश्वर मंदिर में जुलूस और सभाएँ की थी।

श्री स्वामीनारायण मंदिर

स्वामी नारायण मंदिर 'पुणे' शहर में अम्बेगांव रोड पर स्थित है। स्वामीनारायण

मंदिर के चारों ओर एक सुंदर लॉन है जो लाल पत्थर से बना है, यह बेहद अच्छी तरह से बना मंदिर आमतौर पर सुबह ७.३० बजे से दोपहर १२ बजे तक और फिर शाम ४ बजे से रात ९ बजे तक खुला रहता है। श्री स्वामीनारायण मंदिर सुबह १०.१५ बजे से ११.१५ बजे के बीच और फिर शाम ६.१५ बजे से शाम ७ बजे तक भगवान को भोग चढ़ाने के दौरान बंद रहता है। दैनिक आरती होती है जो अलग-अलग समय पर मंदिर में होती है। मंदिर में कई बुनियादी दिशा-निर्देश भी हैं, जिनका पालन करने के लिए भक्तों और आगंतुकों को कहा जाता है ताकि मंदिर की महिमा बनी रहे।

नागेश्वर मंदिर

नागेश्वर मंदिर 'पुणे' के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। सोमवार पेठ, पुणे, महाराष्ट्र में स्थित यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। माना जाता है कि मंदिर १३ वीं शताब्दी ईस्वी में वास्तुकला की यादव शैली में बनाया गया था। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु, सर्वशक्तिमान मारुति और श्री दत्तात्रेय जैसे कई अन्य देवताओं के मंदिर हैं। भक्तों का मानना है कि मंदिर के पास जलाशय के पानी से कुष्ठ रोग ठीक हो सकता है। विशाल संरचना में प्राचीन काल के शिलालेख हैं, मंदिर का सरकार द्वारा जीर्णोद्धार कराया गया है। मंदिर में हर साल महाशिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है, हनुमान जयंती और विनायक

चतुर्थी भी मनायी जाती है। मंदिर दर्शन का समय प्रतिदिन सुबह ६.०० बजे से रात १०.०० बजे तक है।

श्री महालक्ष्मी मंदिर

श्री महालक्ष्मी मंदिर महाराष्ट्र के 'पुणे' शहर में स्थित है। मंदिर में देवी के तीन रूप हैं, जिनमें से एक महासरस्वति हैं जो ज्ञान का प्रतीक हैं, माता लक्ष्मी जो धन और समृद्धि का प्रतीक है और महाकाली मृत्यु के समय का निर्वहन करती

हैं। मंदिर में द्रविड़ शैली की वास्तुकला है और मंदिर का शिखर लगभग ५५ फीट ऊंचा और २४ फीट चौड़ा है। मंदिर को पूरी तरह बनने में करीब १२ साल लगे थे। देवी की मुख्य मूर्ति प्राचीन संगमरमर से बनी है। मोगरा से उत्सव के दौरान मूर्तियों को सजाया जाता है। व्यापक रूप से मनाए जाने वाले अन्य त्योहारों में नवरात्रि, होली, ब्रह्म उत्सव, राम नवमी और जन्माष्टमी शामिल हैं।

भारत ८ प्रतिशत की वृद्धि दर प्राप्त कर सकता है: विश्व बैंक अध्यक्ष

विश्व बैंक के अध्यक्ष श्री डेविड मॉलपास ने कहा कि कोविड-१९ महामारी के दौरान भारत को चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उसने मजबूत वापसी की। एक मजबूत निजी क्षेत्र, भूमि व कृषि सुधारों, छोटे उद्यमों को क्रेडिट सुनिश्चित कर तथा अन्य उपायों से भारत ८% की वृद्धि दर प्राप्त कर सकता है। उन्होंने एक साक्षात्कार में बताया कि आपूर्ति श्रृंखलाओं और विनिर्माण के वैश्विक विविधीकरण के बीच 'भारत' के लिए

निवेश को आकर्षित करने का सही समय है, उन्होंने देश को प्रतिस्पर्धी बनाने पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया। श्री मॉलपास जी२० के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की बैठक में भाग लेने के लिए भारत आए थे, उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण से २२ फरवरी, २०२३ को मुलाकात की थी।

With Best Compliments

Sri Pradip Kumar Todi

Lyra WOMEN'S WEAR

LUX VENUS INNERWEAR

३० मार्च १९४९ का सूर्योदय लेकर आया एक नया सवेरा राजस्थान प्रदेश के लिए

भारत का एक राज्य बना राजस्थान

राजस्थान यानि कि राजपूतों का स्थान, देश के विकास में राजस्थान और राजस्थानियों का अमूल्य योगदान रहा है। चाहे वह उद्योग धन्धे के क्षेत्र में हो या साहित्य व सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में। जाहिर तौर पर राजस्थान की कुछ खूबियाँ है, अपनी इन्हीं खूबियों के कारण ही हवेलियों का यह प्रदेश पुरे दुनिया में आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

३० मार्च राजस्थान दिवस के उपलक्ष्य में राजस्थान की इन्ही खूबियों पर एक बार फिर से प्रकाश डालने की कोशिश में 'मैं भारत हूँ' पत्रिका परिवार द्वारा प्रस्तुत राजस्थान परम्पराओं का संक्षिप्त विवरण, आप सब के सामने...

नई किरण

३० मार्च १९४९ का सूर्योदय लेकर आया एक नया सवेरा, जब भारत के मानचित्र पर राजस्थान राज्य का उदय हुआ। भारत की स्वतंत्रता के बाद देशी राज्यों के विलय और उनकी व्यवस्था करने की समस्या समाधान चाहती थी। ५ जुलाई १९४७ को सरदार वल्लभ भाई पटेल ने रियासती विभाग का कार्यभार संभाला, राजाओं के प्रति उनकी सदाशयता मित्रभाव तथा सम्मानजनक व्यवहार ने राजाओं को प्रभावित किया। सरदार पटेल ने अपने विश्वस्त साथियों के सहयोग व परामर्श से सर्वप्रथम छोटे राज्यों की ओर ध्यान दिया, उन्होंने अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली राज्यों को मिलाकर 'मत्स्य संघ' के नाम से पहला राज्य गठित किया, जिसका उद्घाटन १८ मार्च १९४८ को केंद्रीय खान मंत्री एन.वी. गाडगिल ने किया। महाराजा धौलपुर उदयभान सिंह राजप्रमुख तथा 'अलवर' के शोभाराम प्रधानमंत्री बनाए गए। एकीकरण के दूसरे चरण में २५ मार्च १९४८ को 'कोटा' में दूसरे संघ का निर्माण हुआ। उदयपुर महाराणा ने भी संघ में शामिल होने पर सहमति दे दी। १८ अप्रैल १९४८ को 'उदयपुर' में संयुक्त राजस्थान संघ का उद्घाटन भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु ने किया, इस संघ में उदयपुर के साथ कोटा, बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, शाहपुरा व टोंक मिलाए गए, इस संघ के राजप्रमुख मेवाड़ के महाराणा भोपालसिंह तथा प्रधानमंत्री माणिक्य लाल वर्मा बनाए गए। १९ जुलाई १९४८ को लावा चीफ-शिप 'जयपुर' राज्य में तथा कुशलगढ़ चीफ-शिप 'बांसवाड़ा' राज्य का अंग होने से राजस्थान में विलीन कर दिया गया, इस समय तक तीन बड़ी रियासतों- जयपुर, जोधपुर व बीकानेर के अलावा लगभग सभी राज्य एकता की डोर में बांध लिये गए थे। जून १९४८ में इन सभी रियासतों को कांग्रेस ने संगठित होकर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस का गठन किया, जिसके प्रथम अध्यक्ष गोकुलभाई भट्ट निर्वाचित हुए। १९४८ में जयपुर में हुए अ.भा. कांग्रेस के अधिवेशन में सरदार पटेल ने जयपुर, जोधपुर व बीकानेर के नेताओं तथा अन्य नेताओं से वृहद राजस्थान के निर्माण के संबंध में वार्ता कर उन्हें विश्वास में लिया। राजाओं से भी अलग-अलग स्तर पर वार्ता कर, उन्हें तैयार किया गया। केंद्र शासित जैसलमेर को भी राजस्थान में विलय का निर्णय कर लिया गया। उदयपुर के संघ में शामिल हो जाने से जयपुर, जोधपुर और बीकानेर के विलय का मार्ग प्रशस्त हो गया, इन रियासतों के विलय के साथ उदयपुर के महाराणा को उनके सम्मान के अनुकूल महाराज प्रमुख तथा जयपुर महाराजा को राजप्रमुख तथा कोटा महाराज को उप राजप्रमुख बनाया गया। राजाओं के प्रिवीयर्स भी राज्य की आय के अनुरुप निश्चित किए गए। राजाओं के साथ उनकी निजी संपत्ति के निर्धारण के साथ संधि की गई। ३० मार्च १९४९ (नव संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २००६) को रेवती नक्षत्र, इन्द्र योग में प्रात: १० बज कर ४० मिनट पर भारत के उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने जयपुर के राजप्रसाद के ऐतिहासिक दरबारे-आम में वृहद राजस्थान का उद्घाटन किया गया तथा राजप्रमुख पद के लिए महाराजा जयपुर सवाई मानसिंह को शपथ दिलाई गई। राजप्रमुख ने कोटा के महाराव को उप राजप्रमुख पद तथा पं. हीरालाल शास्त्री को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई गई।

धौलपुर उदयभान सिंह

शेष पृष्ठ २१ पर...

पृष्ठ २० से ... **उद्यमशीलता-** कुरजा ए म्हारा भंवर मिला दीजे रे..

हर बार सर्दियां लगते ही प्रवासी पक्षी 'कुरजा' जब प्रदेश के धोरों पर आती हैं तो विरह वेदना झेल रही स्त्री यही गीत गाती है। परदेश कमाने गए इन पूतों ने आज अपनी मेहनत और उद्यमशीलता से देश-दुनिया में यह साबित किया है कि प्रकृति जहां दिल खोल कर नहीं बसती हो वहां के वाशिंदों को भी उद्यमशीलता और मेहनत संपन्न बना सकती है, इसीलिए चुरु से उठे एक शख्स में लक्ष्मी ने निवास कर लिया। मारवाड़ी मित्तल ने दुनियाँ के अमीरों में जगह बनाई, जबकि दूसरी तरफ जमनालाल बजाज को गांधी जी अपना पांचवां बेटा मानते थे। आज 'बजाज' दुपहिया वाहन बनाने वाली कंपनियों में दुनिया में अव्वल है। बिड़ला, बांगड़, डालमिया, मोदी जैन वगैरह कुछ ऐसे नाम है जो दुनिया में किसी परिचय के मोहताज नहीं। मारवाड़ी उद्योगपतियों को लेकर अगर आप सोचते हैं कि वे गुवाहाटी, चेन्नई, बैंगलोर, हैदराबाद, नेपाल या महाराष्ट्र तक देश की चारों दिशाओं में फैले हैं तो आपको गलतफहमी है। केन्या, दक्षिण अफ्रीका, दुबई, अमेरिका, सिंगापुर और यूरोप का रुख कीजिए, 'मारवाड़ी' व्यवसायी आपको दुनिया के हर कोने में मिलेंगे और हर जगह उन्होंने अपनी उद्यमशीलता से दौलत तो कमाई ही है अपनी मृदुभाषिता और व्यवहार से दोस्त भी कमाए हैं। 'सेबी' के पूर्व अध्यक्ष के अनुसार देश का लगभग एक तिहाई पैसा मारवाड़ी उद्यमियों की जेब में है और वह दिन दूर नहीं जब दुनिया की दौलत का बड़ा हिस्सा इन्हीं की जेब में होगा तब राजस्थान को 'धनीस्तान' के खिताब से नवाज़ा जायेगा।

जमनालाल बजाज

रत्न, ज्वैलरी व हस्तशिल्प

हां सा म्हारी रुणक-झुणक पायल बाजे सा...

घूमर की इन मशहूर पंक्तियों में महिलाओं की प्यारी पायल की आवाज समाहित रहती है तो फिर इस पायल को गढ़ने वाले कारीगरों को कैसे भूलाया जा सकता है। सुन्दर गहने गढ़ने में प्रदेश के जौहरियों का कोई सानी नहीं है, अकेले जयपुर से जहां पिछले बरस १२०० करोड़ रुपयों से भी ज्यादा के गहने निर्यात हुए तो जोधपुर से इतनी ही कीमत का हस्तनिर्मित फर्नीचर विदेश भी गया।

राजस्थान कारीगरों के काम को पूरी दुनिया इज्जत से देखती है, गहने या फर्नीचर ही राजस्थान के कारीगरों को अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर नहीं लाते बल्कि यहां की ब्लू पॉटरी, लोक चित्रकला, बंधेज, साफों, जोधपुरी कोट, हस्तशिल्प, चांदी के काम, दरियों-कालीनों, जूतियों, ब्लॉक प्रिंटिंग, कढ़ाई और मीनाकारी की भी दुनिया दीवानी है। दुनिया के आधे क्रिकेटर जोधपुरी मोजड़ी पहन चुके हैं। बंधेज के विशाल मात्रा में ऑर्डर आते हैं जोधपुर के बंधेज कारीगरों द्वारा निर्मित अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, मध्यपूर्व और चीन तक राजस्थानी बंधेज जाते हैं, अब हमारे ज्यादातर विदेशी ग्राहक फर्नीचर को अपने पूरे मकान की डिजाइन के हिसाब से मंगाते हैं। जोधपुर के लोहे के फर्नीचर, किशनगढ़ी चित्रों और जयपुरी गहनों के दीवाने दुनिया भर में मौजूद हैं।

दर्शनिय

केसरिया बालम आवो नी पधारो म्हारे देश...

बाहर से आने वाले सैलानियों के लिए भारत आने का सबसे बड़ा आकर्षण 'राजस्थान' ही होता है, यही कारण है कि भारत आने वाला हर तीसरा विदेशी पर्यटक प्रदेश का रुख जरुर करता है।

२०२२ को देश में आने वाला विदेशी सैलानी में से हरेक चौथा सैलानी राजस्थान आया, आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इंग्लैंड में बीते दिनों आयोजित विश्व पर्यटन मेले में ज्यादातर सैलानियों ने ताजमहल को राजस्थान में बताया। पर्यटन विभाग के सहायक निर्देशक बताते हैं कि आम हो या खास, हर तरह का सैलानी यहां के रंगों, शिल्प, स्थापत्य, महलों, हवेलियों, धोरों, झीलों और जानवरों को देखने जरुर आता है, यहां एक तरफ जहां लिज हर्ले ब्याह रचाती है तो दूसरी तरफ पुष्कर के घाट पर अमरीकी बाला कोलीना कालबेलिया नृत्य भी करती है।

'पैलेस ऑन व्हील्स' के महंगे टिकट एडवांस में बिकते हैं, वहीं लग्जरी ऑन व्हील्स में भी जगह नहीं मिलती। पुष्कर समारोह, हाथी समारोह, मरु महोत्सव, मारवाड़ समारोह, 'मेरा राजस्थान' परिवार द्वारा आयोजित 'आपणों राजस्थान, मुंबई अब दुनिया भर में मशहूर हो चुके हैं। विदेशी पर्यटक हमारे प्रदेश को देख कर चकित रह जाते हैं और यही वजह है कि लगभग ७० देशों के पर्यटक प्रदेश में आते हैं और इनकी तादाद हर साल बढ़ती ही जा रही है। व्यापक प्रचार और सरकारी संरक्षण के बावजूद, 'राजस्थान' को अभी भी केरल जितने पर्यटकों की दरकार है, अगर सरकार केरल जैसा प्रचार व संरक्षण प्रदान करे तो स्थिति और बेहतर हो सकती है।

खनिज संपदा

दुबई का एक अमीर जब 'जोधपुर' घूमने आया तो उन्हें पता चला कि उनके महल के बाहर लगा पत्थर राजस्थान से पहुँचा है। राष्ट्रपति भवन हो या संसद, राजस्थानी पत्थर के बिना उनकी दीवारें कहाँ शेष पृष्ठ २२ पर...

चहुं ओर स्नेह श्रद्धा, सद्भाव की लहर, न कोई दिखावा,
ना कहीं आडंबर प्रकृति का अनोखा उपहार है 'राजस्थान'

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Rajesh Jain

Mob. : 90021 51005

Manish Jain

Member of Stock Broking Ashika Stock Broking Ltd.

Po. Dinhata, Dist. Coochbehar,
West Bengal, Bharat - 736135

पैलेस ऑन व्हील्स

पृष्ठ २१ से... बनती हैं! दुनियाँ भर में मशहूर ताजमहल राजस्थानी मकराने के संगमरमर से बना है। तांबा, जस्ता, लाइमस्टोन, सैंटस्टोन, कैमिकल्स वगैरह प्रदेश के सीने से निकल कर दुनिया भर में जाते हैं। स्कॉटलैंड की तेलखोजी कंपनी कैयर्न एनर्जी ने जैसे ही बाड़मेर में तेल खोजा, लंदन स्टॉक एक्सचेंज में उसके शेयर्स के वारे-न्यारे हो गए। राजस्थान को खनिजों का अजायब घर कहा जाता है। जैसलमेर का लाईमस्टोन दुनिया भर में निर्यात होता है। राजस्थान से केमिकल्स भी ज्यादातर निर्यात होते हैं। कैयर्न एनर्जी की तेल खोज के बाद 'राजस्थान' खनिज संपदा के अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर नजर आने लगा है। कैयर्न के बाद वेनेजुएला की कम्पनी भी 'जैसलमेर' में गैस की खुदाई में सहयोग कर रही है और प्रदेश के नए कुओं पर दुनिया भर की बड़ी तेल कम्पनियों की नजर गड़ी हुई है।

पशुधन

गायां ने चरावती गोरबंद गूंथियो...

ऊंट के लिए अभी भी ऊन के टुकड़े, कौड़ियां, शीशे और धागे इकट्ठा कर,

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने राजप्रमुख पद के लिए महाराजा जयपुर सवाई मानसिंह को शपथ दिलाई

मरुस्थल की औरतें गोरबंद गूंथ ही लेती हैं 'गोरबंद' यानी ऊंटों का गहना। ऊंट यानी मरुस्थल का गहना। चांदनी रात में थार के धोरों में कैमल सवारी की इच्छा दुनिया भर के सैलानी रखते हैं। हालांकि ऊंट के रेवड़ और उनकी तादाद दिन ब दिन घटती जा रही है, मगर ऊंट ही प्रदेश के सच्चे राजदूत हैं और दुनिया भर में प्रदेश की पहचान भी, पशुधन के लिहाज से उत्तरप्रदेश के बाद राजस्थान देश में दूसरे स्थान पर है क्योंकि प्रदेश में साढ़े पांच करोड़ से भी ज्यादा मवेशी इस वक्त मौजूद हैं, हमारी गायों के घी में कोलेस्ट्रॉल कम होता है। राजस्थानी भेड़ों की ऊन से बने पट्टू-शॉल-दुशाले दुनिया भर में मशहूर हैं। मालावी नस्ल के घोड़ों की स्वामी भक्ति और क्षमता दुनिया भर में मशहूर है। 'मारवाड़ी घोड़े को अगर प्यार मिल जाए तो वह हवा के भरोसे भी जी लेगा' अपनी अनूठी ताकत के कारण आज अमेरिका और यूरोप में मारवाड़ी या मालाणी नस्ल के घोड़ों के दीवाने बढ़ते जा रहे हैं।

हर साल पुष्कर, नागौर, झालरापाटन और दिलवाड़ा के पशुमेलों में राज्य के स्पंदन और पशुओं से इस प्रदेश के अनूठे जुड़ाव को महसूस करने वाले लाखों विदेशी पर्यटक आते हैं, विदेशियों में हाथी समारोह और पुष्कर समारोह के लोकप्रिय होने के कारण ही पशुओं से इन पर्यटक मेलों का सीधा जुड़ाव है।

राजस्थान विशेष :

१) उद्योगपतियों की सूची में आज भी शिखर पर राजस्थानी ही हैं। बात लक्ष्मीनिवास मित्तल की हो या फिर बजाज, बिड़ला, बांगड़, मोदी, जैन की, हर जगह राजस्थानियों ने अपनी श्रेष्ठता के झंडे गाढ़े हैं।

२) राजस्थान विदेशी सैलानियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है, यहाँ पर्यटन

कैयर्न एनर्जी की तेल खोज

नित-नई ऊचाईयों को छू रहा है, यहां की स्थापत्य कला की बात हो या फिर संस्कृति, महल, हवेलियों की, हर कोई एक बार यहां आकर दुबारा आने की इच्छा रखता है।

३) फिल्म टाइटैनिक की हीरोइन कैट विस्लेट हों या फिर हॉलीवुड की धड़कन एंजेलिना जोली जैसी विश्वविख्यात सेलेब्रिटीज, अगर राजस्थान से गहने खरीदते हैं तो बाकि लोगों को राजस्थान की ज्वैलरी कितनी आकर्षित करती होगी।

४) मारवाड़ी घोड़ों की बात हो या फिर नागौर के तंदुरुस्त और विश्वविख्यात बैलों की, पशुधन में राजस्थान का कभी कोई शानी नहीं रहा, तभी तो यहां के पशु मेलों का आकर्षण विदेशियों को भी मरुधरा तक खींच लाता है। 'ऊंट' तो राजस्थान की विशेष पहचान रहा है।

५) राजस्थान को खनिजों का अजायबघर भी कहा जाता है, दुनियाँ भर में मशहूर संगमरमर हो या फिर तांबा, जस्ता और तेल हर महकमे में राजस्थान ने अपनी छाप छोड़ी है।

६) राजस्थान की हस्तशिल्प कला को देखकर तो हर कोई चकित रह जाता है। रत्न आभूषणों में राज्य का खास स्थान है। लाल बंधेज की चुनरी के बगैर दुल्हन का श्रृंगार अधूरा है, जोधपुरी कोट, मोजड़ी और साफे के बगैर दुल्हा भी नहीं जंचता तो है न 'राजस्थान' की विश्व में आन-बान व शान,

तभी तो विश्व में है अपने राजस्थान की पहचान। **- मैंभाहूँ**

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान महिला संगठन ने होली महिला दिवस व गणगौर धूमधाम के साथ में मनाया

कोलकाता: राजस्थानी महिला संगठन द्वारा होली, महिला दिवस व गणगौर बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। संस्था की दो वरिष्ठ सदस्याओं श्रीमती उषा झंवर व विमला मूंदड़ा व अ.भा. महिला संगठन की वर्तमान में बनीं पूर्वांचल संयुक्त मंत्री निशा संजय लड्ढा का महिला दिवस के उपलक्ष्य में दुपट्टा देकर सम्मान किया गया, इसके अलावा भारत के राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के रूप में पुष्पाजी गोयनका ने रूपान्तर किया तो संस्था ने उनका सम्मान किया। होली, नृत्य, कविता, हंसी -ठिठोली के अनेक कार्यक्रम व गणगौर के गीत व नृत्य के साथ रंगारंग कार्यक्रम पूर्वाध्याक्षाओं, सदस्याओं व मेहमानों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षा किरण गुप्ता, सचिव भारती कोठारी, कोषाध्यक्ष सरिता कडेल व कार्यक्रम संचालिका मीनू अग्रवाल, शारदा पारिक व जतन बांठिया के सहयोग से कार्यक्रम पूर्णरूप से सफल रहा।

माहेश्वरी मित्र परिवार का संक्षिप्त परिचय

पूणे का माहेश्वरी मित्र परिवार कोथरूड मंडळ २०१६ में स्थापित हुआ। मंडल सदस्य हर साल होली मिलन, महेश नवमी, अन्नकोट और समाज को जोड़ने का कार्य करते रहते है। ३० से ३५ सदस्य हर महिने एक जगह मिलते हैं,

जो भी प्रोग्राम करना होता है, सभी मिलकर रूपरेखा बनाते हैं, मंडल के सभी सदस्य मदद करते हैं। कोथरूड मंडल में १२५ के आस-पास सदस्य हैं।

विश्व के सभी जैनों को भगवान महावीर के जन्मकल्याणक पर्व पर मंगल कामनायें

Kamal Kumar Jain
Partner
Mob. : 9234620454
e-mail : kala404@yahoo.com

Nalin Kumar Jain
Arun Kumar Jain
Prabin Kumar Jain

V.P. JAIN
(Engineers & Constractors)

ISO 9001 REGISTERED

#504, 5th Floor, Sai Plaza 89, A.J.C. Bose Road,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 014
Ph. : 033 - 4065 3304
e-mail : info@vpjain.in website : www.vpjain.in

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक की हार्दिक शुभकामनाएँ

Dr. C. M. Chhajer
Mob: 9436458911
MD. FIAP. (AFMC) Pune
Former Associate professor of pediatrics
Tripura Medical College & BRAM Teaching Hospital
Sayonjak_Anuvrat Manch _Tripura

- Fellowship Training in Neonatology, AIIMS - New Delhi
- Secretary - NNF, Tripura State Branch
- National Executive Board Member - IAP - 2002_04.08-10 & 2013
- Pioneer Pediatrician Award Winner
- Best State Co-ordinator Award Winner by BPNI

Residence:- Madhya Badarghat, Sidhi Ashram Agartala,
Near Tripura Gramin Bank, Tripura, Bharat-799003
E-mail : c_chhajer@yahoo.co.in

३ अप्रैल २०२३ पर विशेष

महावीर स्वामी का संक्षिप्त जीवन परिचय

भारत में 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' जैन समाज द्वारा उत्सव के रूप में मनाया जाता है। जैन समाज द्वारा मनाए जाने वाले इस त्यौहार को महावीर जयंती के साथ-साथ महावीर जन्म कल्याणक नाम से भी जानते हैं, 'महावीर जन्म कल्याणक' हर वर्ष चैत्र माह के १३ के दिन मनाई जाती है, जो हमारे वर्किंग केलेन्डर के हिसाब से मार्च या अप्रैल में आता है, इस दिन दिगम्बर-श्वेताम्बर जैन आदि मिलकर इस उत्सव को मनाते हैं, तीर्थंकर महावीर के जन्म उत्सव के रूप में मनाए जाने वाले इस त्यौहार में भारत में सरकारी छुट्टी भी घोषित की जाती है।

जैन धर्म के २४वें प्रवर्तक तीर्थंकर महावीर के जन्म के ढाई हजार साल से उनके लाखों अनुयायी दुनिया को अहिंसा का पाठ पढ़ा रहा है, पंचशील सिद्धान्त के प्रर्वतक और जैन धर्म के चौबिसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी अहिंसा के प्रमुख ध्वजवाहकों में से एक हैं, जैन ग्रंथों के अनुसार २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के मोक्ष प्राप्ति के बाद २९८ वर्ष बाद महावीर स्वामी का जन्म ऐसे युग में हुआ, जहां पशुबलि, हिंसा और जाति-पाति के भेदभाव का अंधविश्वास जारी था। महावीर स्वामी के जीवन को लेकर श्वेताम्बर और दिगम्बर जैनियों में कई तरह के अलग-अलग तथ्य हैं:

तीर्थंकर महावीर के जन्म और जीवन की संक्षिप्त जानकारी

महावीर का जन्म लगभग २६०० वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन क्षत्रियकुण्ड नगर में हुआ, तीर्थंकर महावीर की माता का नाम महारानी त्रिशला और पिता का नाम महाराज सिद्धार्थ थे। महावीर कई नामों से जाने गए उनके कुछ प्रमुख नाम वर्धमान, महावीर, सन्मति, श्रमण आदि हैं। महावीर स्वामी के भाई नंदिवर्धन और बहन सुदर्शना थी, बचपन से ही महावीर तेजस्वी और साहसी थे, किंवदंतियोंनुसार शिक्षा पूरी होने के बाद इनके माता-पिता ने इनका विवाह राजकुमारी यशोदा के साथ कर दिया गया था।

महावीर का जन्म एक साधारण बालक के रूप में हुआ था, इन्होंने अपनी कठिन तपस्या से अपने जीवन को अनूठा बनाया, महावीर स्वामी के जीवन के हर चरण में एक कथा व्याप्त है, हम यहां उनके जीवन से जुड़े कुछ चरणों तथा उसमें निहित कथाओं को उल्लेखित कर रहे हैं:

महावीर स्वामी जन्म और नामकरण संस्कार : महावीर स्वामी के जन्म के समय क्षत्रियकुण्ड गांव में दस दिनों तक उत्सव मनाया गया, सारे मित्रों-भाई बंधुओं को आमंत्रित किया गया तथा उनका खूब सत्कार किया गया, राजा सिद्धार्थ का कहना था कि जब से महावीर का जन्म उनके परिवार में हुआ है, तब से उनके धन-धान्य, कोष भंडार बल आदि सभी राजकीय साधनों में बहुत ही वृध्दी हुई, उन्होंने सबकी सहमति से अपने पुत्र का नाम 'वर्ध्दमान' रखा।

महावीर स्वामी का विवाह: कहा जाता है कि महावीर स्वामी अन्तर्मुखी स्वभाव के थे, शुरुवात से ही उन्हें संसार के भोगों में कोई रुचि नहीं थी, परंतु माता-पिता की इच्छा के कारण उन्होंने वसंतपुर के महासामन्त समरवीर की पुत्री यशोदा के साथ विवाह किया, कहीं-कहीं लिखा हुआ यह भी मिलता है कि उनकी एक पुत्री हुई, जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया था।

महावीर स्वामी का वैराग्य:

महावीर स्वामी के माता-पिता की मृत्यु के पश्चात उनके मन में वैराग्य लेने की इच्छा जागृत हुई, परंतु जब उन्होंने इसके लिए अपने बड़े भाई से आज्ञा मांगी तो भाई ने कुछ समय रुकने का आग्रह किया, तब महावीर ने अपने भाई की आज्ञा का मान रखते हुये २ वर्ष पश्चात ३० वर्ष की आयु में वैराग्य लिया, इतनी कम आयु में घर का त्याग कर 'केशलोच' के पश्चात जंगल में रहने लगे। १२ वर्ष के कठोर तप के बाद जम्बक में ऋजुपालिका नदी के तट पर एक साल्व वृक्ष के नीचे सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ, इसके बाद उन्हें 'केवलि' नाम से जाना गया तथा उनके उपदेश चारों और फैलने लगे, बड़े-बड़े राजा महावीर स्वामी के अनुयायी बनें, उनमें से बिम्बिसार भी एक थे। ३० वर्ष तक महावीर स्वामी ने त्याग, प्रेम और अहिंसा का संदेश फैलाया और बाद में वे जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर बनें और विश्व के श्रेष्ठ तीर्थंकरों में शुमार हुए।

उपसर्ग, अभिग्रह, केवलज्ञान: तीस वर्ष की आयु में महावीर स्वामी ने पूर्ण संयम के साथ श्रमण बन गये तथा दीक्षा लेते ही उन्हें मन पर्याय का ज्ञान हो गया, दीक्षा लेने के बाद महावीर स्वामी ने बहुत कठिन तपस्या की और विभिन्न कठिन उपसर्गों को समता भाव से ग्रहण किया।

साधना के बारहवें वर्ष में महावीर स्वामी जी मेढ़िया ग्राम से कोशम्बी आए तब उन्होंने पौष कृष्णा प्रतिपदा के दिन एक बहुत ही कठिन अभिग्रह धारण किया, इसके पश्चात साढ़े बारह वर्ष की कठिन तपस्या और साधना के बाद ऋजुबालिका नदी के किनारे महावीर स्वामी जी शाल वृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ल दशमी के दिन केवल ज्ञान- केवल दर्शन की उपलब्धि हुई।

महावीर और जैन धर्म : महावीर को वीर, अतिवीर और सन्मती के नाम से भी जाना जाता है, वे महावीर स्वामी ही थे, जिनके कारण २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों ने एक विशाल धर्म 'जैन धर्म' का रूप धारण किया। महावीर के जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में कई मत प्रचलित हैं, लेकिन उनके भारत में अवतरण को लेकर एकमत है, वे महावीर के कार्यकाल को ईराक के जराथ्रुस्ट, फिलिस्तीन के जिरेमिया, चीन के कन्फ्यूसियस तथा लाओत्से और युनान के पाइथोगोरस, प्लेटो और सुकरात के समकालीन मानते हैं। भारत वर्ष को महावीर ने गहरे तक प्रभावित किया, उनकी शिक्षाओं से तत्कालीन राजवंश खासे प्रभावित हुए और ढेरों राजाओं ने जैन धर्म को अपना राजधर्म बनाया। बिम्बसार और चंद्रगुप्त मौर्य का नाम इन राजवंशों में प्रमुखता से लिया जाता है, जो जैन धर्म के अनुयायी बने। महावीर ने अहिंसा को जैन धर्म का आधार बनाया, उन्होंने तत्कालीन सनातन समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था का विरोध किया और सबको समान मानने पर जोर दिया, उन्होंने 'जियो और जीने दो' के सिद्धान्त पर जोर दिया, सबको एक समान नजर में देखने वाले तीर्थंकर महावीर अहिंसा और अपरिग्रह के साक्षात मूर्ति थे, वे किसी को भी कोई दु:ख नहीं देना चाहते थे।

महावीर स्वामी के उपदेश : महावीर ने अहिंसा, शेष पृष्ठ २५ पर...

पृष्ठ २४ से... तप, संयम, पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ती, अनेकान्त, अपरिग्रह एवं आत्मवाद का संदेश दिया। महावीर स्वामी ने यज्ञ के नाम पर होने वाले पशु-पक्षी तथा नर की बली का पूर्ण रूप से विरोध किया तथा सभी जाती और धर्म के लोगों को धर्म पालन का अधिकार बतलाया, महावीर स्वामी ने उस समय जाती-पाति और लिंग भेद को मिटाने के लिए उपदेश दिये।

निर्वाण : कार्तिक मास की अमावस्या को रात्री के समय महावीर स्वामी निर्वाण को प्राप्त हुये, निर्वाण के समय तीर्थंकर महावीर स्वामी की आयु ७२ वर्ष की थी।

विशेष तथ्य: तीर्थंकर महावीर

* तीर्थंकर महावीर के 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त को जन-जन तक पहुंचाने के लिए जैन धर्म के अनुयायी तीर्थंकर महावीर के निर्वाण दिवस को हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को त्यौहार की तरह मनाते हैं, इस अवसर पर वह दीपक प्रज्वलित करते हैं।
* जैन धर्म के अनुयायियों के लिए उन्होंने पांच व्रत दिए, जिसमें अहिंसा, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह बताया।
* अपनी सभी इंन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने की वजह से वे जितेन्द्रिय या 'जिन' कहलाए।
* जिन से ही जैन धर्म को अपना नाम मिला।
* जैन धर्म के गुरूओं के अनुसार तीर्थंकर महावीर के कुल ११ गणधर थे, जिनमें गौतम स्वामी पहले गणधर थे।

तीर्थंकर महावीर के और ग्यारह गणधर

श्री इंद्रभूती जी	श्री अग्निभूति जी
श्री वायुभूति जी	श्री व्यक्त स्वामीजी
श्री सुधर्मा स्वामीजी	श्री मंडितपुत्रजी
श्री मौर्यपुत्र जी	श्री अकम्पित जी
श्री अचलभ्राता जी	श्री मोतार्यजी
श्री प्रभासजी	

* तीर्थंकर महावीर ने ५२७ ईसा पूर्व कार्तिक कृष्णा द्वितीया तिथि को अपनी देह का त्याग किया, देह त्याग के समय उनकी आयु ७२ वर्ष थी।
* बिहार के पावापुरी जहां उन्होंने अपनी देह को छोड़ा, जैन अनुयायियों के लिए यह पवित्र स्थल की तरह पूजित किया जाता है।
* महावीर की मृत्यु के दो सौ साल बाद, जैन धर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदायों में बंट गया।
* दिगम्बर सम्प्रदाय के जैन संत वस्त्रों का त्याग कर देते हैं, इसलिए दिगम्बर कहलाते हैं जबकि श्वेताम्बर सम्प्रदाय के संत श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।

महावीर स्वामी की शिक्षाएं: महावीर द्वारा दिए गए पंचशील सिद्धान्त ही जैन धर्म का आधार बने हैं, इन सिद्धान्तों को अपना कर ही एक अनुयायी सच्चा जैन अनुयायी बन सकता है, सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पंचशील कहा जाता है।

सत्य – महावीर ने सत्य को महान बताया, उनके अनुसार, सत्य इस दुनिया में सबसे शक्तिशाली है और एक अच्छे इंसान को किसी भी हालत में सच का साथ नहीं छोड़ना चाहिए, एक बेहतर इंसान बनने के लिए जरूरी है कि हर परिस्थिति में सच बोला जाए।

अहिंसा – दूसरों के प्रति हिंसा की भावना नहीं रखनी चाहिए, जितना प्रेम हम खुद से करते हैं उतना ही प्रेम दूसरों से भी करें, अहिंसा का पालन करें।

अस्तेय – दूसरों की वस्तुओं को चुराना और दूसरों की चीजों की इच्छा करना महापाप है, जो मिला है उसमें ही संतुष्ट रहें।

ब्रह्मचर्य – तीर्थंकर महावीर के अनुसार जीवन में ब्रहमचर्य का पालन करना सबसे कठिन है, जो भी मनुष्य इसको अपने जीवन में स्थान देता है, वो मोक्ष प्राप्त करता है।

अपरिग्रह – ये दुनिया नश्वर है. चीजों के प्रति मोह ही आपके दु:खों को कारण है. सच्चे इंसान किसी भी सांसारिक चीज का मोह नहीं करते।

१. कर्म किसी को भी नहीं छोड़ते, ऐसा समझकर कर्म बांधने से भय रखो।
२. तीर्थंकर स्वयं घर का त्याग कर साधु धर्म स्वीकारते हैं तो फिर बिना धर्म किए हमारा कल्याण कैसे हो?
३. भगवान ने जब इतनी उग्र तपस्या की तो हमें भी शक्ति अनुसार तपस्या करनी चाहिए।
४. भगवान ने सामने जाकर उपसर्ग सहे, हम-सभी अपने सामने आए उपसर्गों को समता से सहन करना चाहिए।

वर्ष २०२३ को में महावीर जन्म कल्याणक पर्व कब है?

वर्ष २०२३ को महावीर जन्म कल्याणक ३ अप्रैल को मनाया जाएगा, जहां भी जैनों के मंदिर है, वहां इस दिन विशेष आयोजन किए जाएंगे। 'महावीर जन्म कल्याणक' अधिकतर त्योहारों से अलग, बहुत ही शांत माहौल में विशेष पूजा अर्चना द्वारा मनाया जाता है, इस दिन तीर्थंकर महावीर का विशेष अभिषेक किया जाता है तथा जैन बंधुओं द्वारा अपने मंदिरों में जाकर विशेष ध्यान और प्रार्थना की जाती है, इस दिन हर जैन मंदिर में अपनी शक्ति अनुसार गरीबों मे दान दक्षिणा का विशेष महत्व है। भारत में गुजरात, राजस्थान, बिहार, कोलकाता, पूर्वांचल आदि क्षेत्रों में स्थापित प्रसिद्ध मंदिरों में यह उत्सव विशेष रूप से मनाया जाता है।

- मैंभाहूँ

'सत्य-अहिंसा' धर्म हमारा 'नवकार' हमारी शान है,
'महावीर' जैसा नायक पाया जैन हमारी पहचान है
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक की हार्दिक शुभकामनाएँ

Yogendra Mahendra Chordia Jain
Mob. : 9422026000
SKD Group
8/51A, Shbhraj Appt.,
Near UCO Bank, Mukund Nagar,
Pune, Maharashtra,
Bharat-411037

यदि मुझे विश्वास हो जाये कि 'हिन्दी' राष्ट्रीय एकता में बाधक है, तो मैं 'हिन्दी' को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा - सेठ गोविन्ददास

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

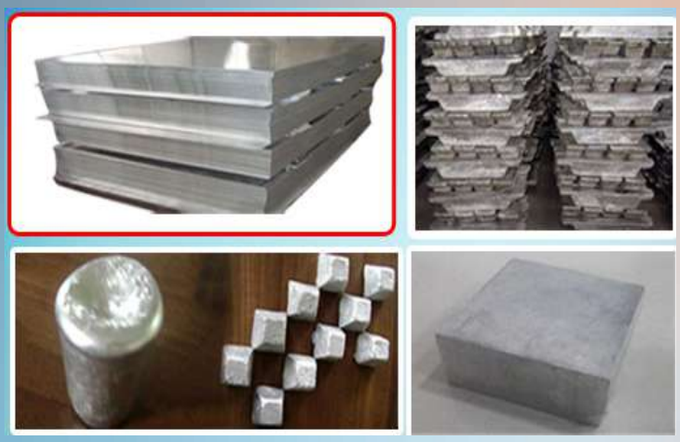

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि
मैं भारत हूँ

सतीश लोहिया
अध्यक्ष सांगवी परिसर महेश मंडल पुणे
नागौर निवासी-पुणे प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२३१३८८६७

सतीशजी अपनी कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं 'पुणे' संस्कृति और शिक्षा का केंद्र हमेशा से ही रहा है। आज भी यहां के लोग अपनी संस्कृति को संजोए हुए हैं। 'पुणे' शिक्षा के लिए 'पुणे' पूरे विश्व में विख्यात है, इसीलिए देश ही नहीं विदेशों से भी विद्यार्थी यहां शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। ३० साल पहले और आज के 'पुणे' में बहुत ही अंतर आ गया है। यहां सभी धर्म व समाज के लोग बसे हैं इसके बावजूद यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण हैं। यहां हर समाज के लोग ऐसे मिल जाते हैं जैसे दूध में शक्कर। 'पुणे' के पर्यटन की बात की जाए तो यह छत्रपति शिवाजी महाराज की जन्मभूमि और कर्मभूमि है, यहां उनके द्वारा स्थापित २६ किले हैं जो 'पुणे' की शोभा को और भी बढ़ा देते हैं। १२ ज्योर्तिलिंगों में से १ ज्योर्तिलिंग भीमाशंकर 'पुणे' में ही स्थित है और अष्टविनायक गणपति में पांच मंदिर 'पुणे' में स्थापित है, ऐसी ही अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', क्योंकि यही नाम सदियों से चला आ रहा है यही नाम हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

सतीशजी के पूर्वज मूलतः राजस्थान के 'नागौर' जिले के निवासी थे। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'पुणे' में संपन्न हुई है, पिछले ३० वर्षों से आप 'पुणे' जिले के पिंपरी-चिंचवड नगरपालिका में स्थित सांगवी के निवासी हैं और यहां फाइनेंस के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। सांगवी परिसर महेश मंडल के संस्थापक हैं और पिछले १५ वर्षों से अध्यक्ष के पद पर अपनी भूमिका निभा रहे हैं, साथ ही पुणे जिला महेश्वरी सभा व महाराष्ट्र प्रदेश महेश्वरी सभा के कार्यसमिति में भी सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

मनीष कासट
अध्यक्ष महेश्वरी पश्चिम परिवार
पीपाड़ सिटी निवासी-पुणे प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२०१५२१२

मनीषजी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पुणे ऑल राउंड सिटी है, यह शिक्षा का केंद्र, औद्योगिक क्षेत्र, आईटी का केंद्र, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक शहर है जो हर तरह से संपन्न शहर कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगा। यहां व्यवसाय व रोजगार के लिए आने वाला व्यक्ति कभी खाली हाथ नहीं बैठता। अपनी मेहनत और सूझबूझ से वह अपना एक विशेष मुकाम पा ही लेता है। 'पुणे' इतना बड़ा शहर भी नहीं है इसलिए लोग एक दूसरे को आसानी से जानते और पहचानते हैं। 'पुणे' की सांस्कृतिक दृष्टिकोण की बात की जाए तो 'पुणे' का गणपति उत्सव पूरे विश्व में विख्यात है, साथ ही यहां महेश्वरी समाज द्वारा 'महेश नवमी' और 'होली मिलन' का कार्यक्रम बहुत ही भव्य रुप में मनाया जाता है, जिसमें पुणे जिले के महेश्वरी समाज उपस्थित होते हैं। दीपावली का पर्व भी 'पुणे' में देखते ही बनता है। ऐतिहासिक क्षेत्र की बात की जाए तो 'पुणे' एक ऐतिहासिक स्थल है, यह छत्रपति शिवाजी महाराज की जन्मभूमि-कर्मभूमि और पेशवाओं का गढ़ कहा जाता है, इसीलिए आज भी इन्हें विशेष मान दिया जाता है, सारस बाग का गणपति पेशवाओं द्वारा ही स्थापित किया गया है जो आज भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है, इसके अलावा यहां शनिवार वाडा, लाल महल जैसे ऐतिहासिक स्थापत्य भी हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना कि ऐसा कुछ होना चाहिए ताकि अपने देश का एक ही नाम रहे 'भारत', इंग्लिश में हम इसे इंडिया क्यों बोलते हैं जो कि अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है जो सर्वथा अनुचित है, अपने देश की पहचान 'भारत' नाम से है भारत नाम से ही रहनी चाहिए।

मनीषजी मूलतः राजस्थान स्थित 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से 'पुणे' में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'पुणे' में ही संपन्न हुई है। यहां आप स्टील व कंस्ट्रक्शन के व्यवसाय से जुड़े हैं साथ ही कई सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय हैं। महेश्वरी पश्चिम परिवार के अध्यक्ष हैं और महेश इंडस्ट्रियल ग्रुप के भी सचिव रहे हैं। महेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल के कार्यकारिणी सदस्य हैं। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

श्यामसुंदर कलंत्री

पूर्व अध्यक्ष महेश सेवा संघ
जायल निवासी-पुणे प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२०७९८२२

श्यामसुंदरजी अपनी कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले 'पुणे' की आबादी मात्र २ लाख थी और आज ५० लाख के करीब है। 'पुणे' चारों तरफ से १५ किलोमीटर तक बढ़ चुका है, यहां हर राज्य व शहर से लोग आकर बसे हैं, दिन-प्रतिदिन यहां की संख्या बढ़ती जा रही है। जनसंख्या के अनुरूप यहां गाड़ियां भी अधिक हैं, इसीलिए यहां ट्रैफिक अधिक होने लगी है। पहले 'पुणे' को 'साइकिल सिटी' के नाम से जाना जाता था, क्योंकि यहां हर किसी के पास साइकिल होती थी। 'पुणे' शिक्षा के लिए हमेशा से ही उत्तम रहा है, आज यहां राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थाएं बन जाने से शिक्षा का हब बन चुका है। यह एक शांत शहर है, सभी एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते हैं। यहां के लोग आज भी अपनी संस्कृति को संजोए हुए हैं। यहां विशाल रूप में शिवाजी जयंती व गणपति उत्सव मनाया जाता है, इसके अलावा होली-दिवाली जैसे पर्व भी संपूर्ण समाज द्वारा मिलकर मनाए जाते हैं। १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग और अष्टविनायक गणेश मंदिर पुणे में ही स्थित है। धार्मिक दृष्टिकोण से भी 'पुणे' महत्वपूर्ण स्थान रखता है और पर्यटन की बात की जाए तो यहां कई ऐतिहासिक स्थल हैं जो 'पुणे' की शोभा को बढ़ा देते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'। वर्तमान सरकार द्वारा भी 'भारत' की संस्कृति को बढ़ाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। हमें भी अपने देश के गौरवशाली इतिहास को संजोए रखने के लिए 'भारत' नाम का ही उपयोग करना चाहिए।

श्यामजी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'जायल' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'पुणे' में ही संपन्न हुई है। यहां आप अनाज ट्रेडिंग और कंस्ट्रक्शन के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। महेश्वरी समाज द्वारा स्थापित मंगल कार्यालय में २० वर्षों से ट्रस्टी हैं। महेश सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। अखिल भारतीय महेश्वरी महासभा महाराष्ट्र जिले के कार्यकारिणी सदस्य हैं, ऐसी ही अनेक कई संस्थाओं में भी संलग्न हैं और यथासंभव जरूरतमंदों की भी सहायता करते रहते हैं। पुणे में राजनितीक दल भाजपा की शुरूवात करने में आपकी अहम भूमिका रही है, वर्तमान में भी आप भाजपा जेष्ठ नागरिक आघाडी पुणे शहर के उपाध्यक्ष हैं। सीताराम गणेश राम कलंत्री चॅरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष है। महेश्वरी चॅरिटेबल फाउंडेशन पुणे से भी जुड़े हुए है। जय भारत!

अशोक कुमार बाहेती

कार्यकारिणी सदस्य अ.भा माहेश्वरी महासभा
हरसोर निवासी-इचलकरंजी प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२११०८०००

अशोकजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थान वासी चाहे जहां भी रहें उनका अपनी पैतृक भूमि राजस्थान से लगाव बना हुआ है, क्योंकि राजस्थान की माटी ही ऐसी है, यह वीरों की भूमि है, जहां कई शूरवीर ने जन्म लिया, जिन्होंने अपनी शूर वीरता से इतिहास में अपना गौरवशाली नाम लिखा। यहां की लोक कला, भोजन, लोक संस्कृति रजवाड़ा महल लोगों को अपनी और आज भी आकर्षित करते हैं। आज भी हम राजस्थानी अपनी संस्कृति व संस्कारों को संजोए हुए हैं। राजस्थान की विशेषताओं के बारे में जितना उल्लेख किया जाए उतना ही कम होगा। हमारी पीढ़ी आज भी अपनी संस्कृति और राजस्थान से जुड़ी है। मैं अपनी उम्र वालों को यही संदेश देना चाहता हूं कि हमारी आने वाली पीढ़ी को भी हम अपनी संस्कृति और राजस्थान से जोड़े रखें, इसके लिए हमारे जो भी पर्व हैं बड़े ही हर्षोल्लास से मनाना चाहिए, इसमें युवाओं को भी जोड़ना चाहिए और अपनी पैतृक भूमि पर जाकर वहां कोई ना कोई कार्यक्रम आयोजित करना ही चाहिए, जिससे हमारे समाज और गांव की युवा पीढ़ी जुड़े और उन्हें भी अपनी संस्कृति व पैतृक निवास स्थान के महत्व की जानकारी हो, इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु वर्ष में एक दिवस 'हरसोर' जाकर एक कार्यक्रम का आयोजन करते हैं, जिसमें सामूहिक भोज होता हैं, गौशाला जाते हैं, माहेश्वरी भवन जाते है, इससे वे अपने निवास स्थान से जुड़े रहते हैं, युवाओं को भी इसमें जोड़ने का प्रयास किया जाता है। अपने बच्चों को भी वर्ष में एक बार राजस्थान तथा पैतृक गांव ले जाना चाहिए।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए, सर्वप्रथम 'भारत' नाम का अर्थ और इसके महत्व के बारे में लोगों को जानकारी होनी चाहिए।

अशोकजी मूलतः का राजस्थान के नागौर जिले में स्थित डेगाना तहसील के 'हरसोर' गांव के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई पीढ़ियों से आपका परिवार महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले में स्थित 'इचलकरंजी' में बसा हुआ है, यहां आप टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन द्वारा निर्मित भवन के प्रभारी सदस्य हैं। अ.भा. माहेश्वरी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य, पुष्कर माहेश्वरी सेवा सदन प्रबंध समिति के सदस्य है। पावरलूम क्लोथ एंड यार्न मर्चेंट एसोसिएशन के डायरेक्टर के रूप में सेवारत हैं। जय भारत!

चेतन भंडारी
चीफ सेक्रेटरी जीतो पुणे चैप्टर
नाडोल निवासी-पुणे प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२३०३०६४५

चेतनजी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'पुणे' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पुणे' अपनी कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है, यह धार्मिक, औद्योगिक, सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, शैक्षणिक हर दृष्टिकोण से उत्तम है। 'पुणे' में जैन समाज का इतिहास सैकड़ों वर्ष पुराना है जो यहां व्यापार के उद्देश्य से आकर बसे और यहां व्यवसाय करने लगे। सन् १९९९ से आई.टी. हब के रूप में 'पुणे' में प्रसिद्धि पाई और विशेषकर यहां ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री भी होने के कारण स्थानांतरित लोगों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। पहले 'पुणे' १५ किलोमीटर के दायरे तक था आज यह ४५ किलोमीटर के दायरे तक फैल चुका है। यहां कंस्ट्रक्शन का भी बहुत तेजी से विकास हुआ है। पहले यह कस्बा से शहर, शहर से मेट्रो सिटी बनते जा रहा है। यहां जैन समाज की आबादी पहले २० से २५ हजार थी, आज डेढ़ लाख के करीब पहुंच चुकी है, जिनमें चारों संप्रदायों के लोग बसे हैं। सभी के बीच आपसी मेल-मिलाप बहुत ही उत्तम है। यहां का संपूर्ण जैन समाज 'सकल जैन संघ' के अंतर्गत आता है। सन् २०१९ में यहां आचार्य डॉ.शिवमुनि म.सा. का बहुत ही भव्य चातुर्मास हुआ था, जो एक ऐतिहासिक चातुर्मास के रूप में जाना जाता है। यहां 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' के दौरान वरघोड़ा निकाले जाते हैं, जिसमें १२ से १५ सौ लोगों की उपस्थिति होती है। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन 'जीतो' द्वारा अहिंसा रन मैराथन का आयोजन किया जाता है, ऐसी अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, हमारे हर कार्य व राष्ट्रगान में हम 'भारत' का ही उल्लेख करते हैं तो इसे हर भाषा में 'भारत' ही बोला जाना चाहिए और यह संवैधानिक तौर पर भी किया जाना चाहिए।

चेतनजी मूलतः राजस्थान स्थित 'नाडोल' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'पुणे' में ही संपन्न हुई है। यहां आप पेपर इंडस्ट्री से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहे हैं। 'जीतो' पुणे चैप्टर के चीफ सेकेट्री हैं और ८ सालों से इस संस्था से जुड़े हैं। समाज में भी विशेष रूप से सक्रिय हैं, इसके साथ ही लायंस क्लब व कर्मा फाउंडेशन से भी जुड़े हैं, अन्य कई संस्था में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

डॉ. नवनीत मानधनी
उद्योगपति व प्रसिद्ध समाजसेवी
नांदेड निवासी-पुणे प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ८६०५११२२३३

नवनीतजी अपनी कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पुणे' का उल्लेख सर्वप्रथम शिक्षा के लिए किया जाता है। भारत के शैक्षणिक इतिहास में 'पुणे' का अमूल्य योगदान है। यहां कई उत्तम शैक्षणिक संस्थान हैं, ऐसे शैक्षणिक संस्थान शायद ही भारत में अन्यत्र कहीं होंगे। 'पुणे' को मेट्रो सिटी होने का उल्लेख भी किया जाता है, अन्य मेट्रो सिटी की तुलना में यहाँ का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। अर्बनाइजेशन होने के बावजूद आज भी यहां की परंपरा और संस्कृति बनी हुई है। कुछ मुद्दों को छोड़ दिया जाए तो 'पुणे' का औद्योगिक विकास बहुत ही उन्नत है, जो 'पुणे' के चारों ओर फैला हुआ है। यहां उद्योग का स्थापना के लिए जो भी वस्तुओं की आवश्यकता होती है वह आसानी से उपलब्ध हो जाती है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण है, यहां के मुस्लिम बंधु भी गणपति उत्सव मनाते हैं तो हिंदू समाज के लोग मुस्लिम समाज के कार्यक्रमों और त्योहारों में सम्मिलित होते हैं। पर्यटन की बात की जाए तो 'पुणे' में शनिवार वाडा, सिंहगढ़, पर्वती हिल और मंदिर, पु.ल. देशपांडे गार्डन उल्लेखनीय है। अष्टविनायक के कुछ मंदिर पुणे जिले में स्थापित है। पुणे से ५० किलोमीटर के परिसर में कई प्रमुख स्थान है, जो पुणे को और सुशोभित करते हैं। 'पुणे' में हर समाज की अपनी सामाजिक संस्थाएं हैं। यहां माहेश्वरी समाज की लगभग ५० संस्थाएं पूरे पुणे में कार्यरत हैं। संस्थाओं द्वारा अन्नकूट का पर्व बहुत ही भव्य रूप में होता है ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि मैं एक अंक विशेषज्ञ हूं और मेरे अनुसार 'भारत' नाम ही हमारे देश के लिए सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ है, 'भारत' नाम लेने पर हमें गर्व की अनुभूति होती है।

डॉक्टर नवनीतजी मूलतः महाराष्ट्र के 'नांदेड़' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। सन २००१ से आप 'पुणे' में शिक्षा हेतु बसे और पीएचडी एमफिल की पढ़ाई पुणे से ही ग्रहण की। स्वयं का कोचिंग इंस्टीट्यूट चलाते हैं। औद्योगिक क्षेत्र से भी जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। निरंजन सेवाभावी संस्था के संस्थापक अध्यक्ष हैं। जय भारत!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

राम बांगड़

संस्थापक अध्यक्ष रक्ताचे नाते ट्रस्ट पुणे

पुणे निवासी

भ्रमणध्वनिः ९४२२०८५९२४

रामजी बांगड़ अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पुणे' के बारे में जितना भी कहा जाए उतना कम ही होगा, यहां का वातावरण हमेशा ही शांत और सौहार्दपूर्ण बना रहता है, यह एक सुरक्षित और शांति भरा शहर है, इसीलिए लोग यहां आ कर रहना पसंद करते हैं, यहां के लोग हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और हर कार्य के लिए तत्पर रहते हैं चाहे वह धार्मिक हो या सामाजिक। 'पुणे' में रहने वाला बिना जाति धर्म के भेदभाव के हमेशा सहयोगी प्रवृत्ति अपनाता है, विशेषकर यहां के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, इसीलिए यहां कई देवस्थान है जो 'पुणे' और खास बना देते हैं चाहे वह सारस बाग का गणपति हो या दगडूशेठ हलवाई जी का गणपति या कोई मठ। यहां गणेश उत्सव पूरे धूमधाम हर्षोल्लास व आत्मीयता से मनाया जाता है, जिसे देखने दूरदराज से लोग आते हैं, इसीलिए 'पुणे' का गणेश उत्सव विश्व प्रसिद्ध है। पुणे पर्यटन की दृष्टि से भी उत्तम स्थान है, यहां २ दिन में पुणे के प्रमुख स्थानों के दर्शन किए जा सकते हैं। ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इसके लिए हर नागरिक को प्रयास भी करना होगा तभी हमारा 'भारत' केवल 'भारत' ही कहलाएगा।

रामजी बांगड़ के पूर्वज मूलतः राजस्थान के निवासी थे, आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र के 'लातूर' में बसा हुआ था। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले कुछ वर्षों से आप 'पुणे' में बसे हैं और बैंकिंग क्षेत्र से सेवानिवृत्त हुए हैं। यूनियन व कर्मचारी सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में ८ सालों से कार्यरत हैं। वर्तमान में पूरी तरह से समाज सेवा में सक्रिय हैं और विशेषकर रक्तदान क्षेत्र में आपका नाम उल्लेखनीय है, इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आपने 'रक्ताचे नाते ट्रस्ट' की स्थापना की, वर्तमान में इसके अध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। आपने रक्तदान के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं, अब तक आपने १३६ बार रक्तदान, १५ प्लाज्मा और २४ बार प्लेट लेट्स का दान किया है। १५ राज्यों और २२ जिलों में ५०००० से भी अधिक रक्त दाता को जोड़ा है। ३ वर्ष पूर्व 'पुणे से कश्मीर' जाकर रक्तदान शिविर का आयोजन किया। ९०० से अधिक कोरोना पीड़ितों को प्लाज्मा उपलब्ध करवाया, अनेकों को नवजीवन प्राप्त हुआ है। आज तक आपके द्वारा हजार बार से अधिक रक्तदान शिविर आयोजित किए गए हैं, अनेक सामाजिक कार्य में अग्रणी भूमिका निभाई है। आर्थिक क्षमता में कमजोर मरीजों को मुफ्त रक्त उपलब्ध कराने का कार्य किया है। प्रतिवर्ष डेढ लाख लोगों को रक्त उपलब्ध कराए हैं, इसीलिए आपको कई सामाजिक व राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, २००८ में राज्य स्तर पर पुरस्कार रक्त मित्र, २००९ में जीवन गौरव पुरस्कार, २०११ में सुनील दत्त पुरस्कार, २०१३ में अभिनेता अक्षय कुमार के हाथों से सम्मान, २००० में पुणे हीरो पुरस्कार प्रथम पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा ताई पाटिल जी के हाथों, २०१६ में सामाजिक समरसता मंच पुरस्कार, २०१९ में महेश गौरव राज्य स्तरीय पुरस्कार, २०२१ में महाराष्ट्र जन सम्मान पुरस्कार एलएस विज़न फाउंडेशन के द्वारा, २०२२ में गौरव रत्न पुरस्कार जैसे कई सम्मान आपको प्राप्त हुए हैं। आपको मिले सम्मान के लिए आपके परिवार का बड़ा योगदान है, विशेषकर आपकी धर्मपत्नी का आपका ध्येय वाक्य है 'कहीं भी, कभी भी, कुछ भी सिर्फ मेरे देश के लिए'। जय भारत!

रामगोपाल चांडक

कोषाध्यक्ष महेश सेवा संघ

लातूर निवासी-पुणे प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४२२०००८५१

रामगोपालजी अपनी कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले 'पुणे' ऑटोमोबाइल इंडस्ट्रीज का हब था, उसके बाद यह शिक्षा का केंद्र बना और आज आईटी का भी हब बन गया है। यहां व्यवसाय, रोजगार, शिक्षा की व्यवस्था अच्छी होने से यहां हर राज्यों के लोग आकर बसने लगे हैं, पहले की तुलना में यहां जनसंख्या बहुत अधिक बढ़ गई है, उसी की तुलना में सुविधाएं भी बढ़ी हैं। पहले यहां का मौसम हमेशा ही सुहावना रहता था पर आज यहां का पर्यावरण अच्छा नहीं रह गया। यहां हर धर्म व संस्कृति के लोग बसे हैं, सभी के बीच आपसी तालमेल बहुत ही उत्तम है। 'पुणे' पेशवाओं का शहर था, पर आज यहां हर समाज के लोग बसे हैं, यहां के लोग आज भी अपनी संस्कृति को संजोए हुए हैं। यहां का गणेश उत्सव पूरे विश्व में विख्यात है, साथ ही यहां कई पर्यटन स्थल है जिनमें पिंपरी चिंचवड में निर्मित साइंस पार्क, वडगांव में निर्मित शिवाजी महाराज का थीम पार्क जैसे कई स्थल हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' जो हमें हमारी संस्कृति और इतिहास से जोड़ता है, जिस तरह 'भारत' के अन्य शहरों, क्षेत्रों के नाम बदले जा रहे हैं उसी तरह अपने देश का भी एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

रामगोपालजी के पूर्वज मूलतः राजस्थान के नागौर के निवासी थे। कई पीढ़ियों से आपका परिवार महाराष्ट्र स्थित 'लातूर' में बसा हुआ है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'लातूर' में ही हुई है। कई वर्षों से आप 'पुणे' में बसे हैं और यहां प्रॉपर्टी के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय रहते हैं। महेश सेवा संघ के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। पूर्व में 'महेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल' से भी जुड़े रहे हैं। लातूर गोरक्षण संस्था के ट्रस्टी, श्री राम ग्रुप के सदस्य हैं, द इंस्टीट्यूट ऑफ ग्राफोलॉजी एड न्यूमोरोलॉजी एज्युकेशन ट्रस्ट से भी जुड़े है। अन्य कई संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

जितेंद्र पित्ती

व्यवसाई व समाजसेवी

बीकानेर निवासी-पुणे प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ८४८५८८३९७३

जितेंद्रजी अपनी कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पुणे' हर क्षेत्र में सर्वोत्तम है। शिक्षा और व्यापार, रोजगार के यहां कई साधन उपलब्ध हैं, इसीलिए इसे शिक्षा का केंद्र भी कहा जाता है। 'पुणे' निवासी आज भी अपनी प्राचीन संस्कृति को संजोये हुए हैं। यहां का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही रमणीय है, इसीलिए यहां हर कोई आना चाहता है। पर्यटन की दृष्टिकोण से भी 'पुणे' बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, यहां पानशेत डैम, हडपसर में स्थित भूलेश्वर मंदिर, शनिवारवाड़ा, सिंहगढ़, केलकर म्यूजियम जैसे कई स्थान हैं, जहां लोग पर्यटन के लिए जाना बहुत ही पसंद करते हैं। यहां बाहर से आने वालों की संख्या बहुत अधिक है, यहां हर धर्म और समाज के लोग बसे हैं, इसके बावजूद एक शांत और सौहार्दपूर्ण वातावरण वाला क्षेत्र कहा जाता है। यहां राजस्थानी समाज की कई सामाजिक संस्थाएं हैं, जो सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। अग्रवाल समाज द्वारा यहां अग्रवाल फाउंडेशन, अग्रवाल फेडरेशन, अग्रवाल किचन जैसी कई सामाजिक संस्थाओं का निर्माण किया गया है, अग्रवाल किचन के माध्यम से पुणे स्थित कई हॉस्पिटल में जरूरतमंदों को भोजन की व्यवस्था करवाई जाती है, सभी अग्रवाल भाई-बहन मिलकर सांस्कृतिक व आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन करते है। ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे देश को कई नामों से जाना जाता है पर हमारे देश की वास्तविक पहचान 'भारत' नाम से ही है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

जितेंद्रजी मूलतः राजस्थान स्थित 'बीकानेर' के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र के 'चिपलुण' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'चिपलुण' में ही संपन्न हुई है, पिछले २०-२२ वर्षों से आप 'पुणे' में बसे हैं और डिजिटल प्रिंटिंग व क्राफ्ट पेपर डिलींग के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। अग्रवाल बिजनेस कमिटी के सदस्य हैं, साथ ही अग्रवाल फाउंडेशन, अग्रवाल किचन से भी जुड़े हैं। अन्य कई संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

सत्येन्द्र राठी

व्यवसाई व समाजसेवी

नागौर निवासी-पुणे प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४२०४९५१४०

सत्येंद्रजी अपनी जन्मभूमि-कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी है पुणे, जहां सवाई गंधर्व जैसे कई सांस्कृतिक कार्यक्रम व पर्व आज भी बड़े ही उत्साह से मनाए जाते हैं। पुणेकर को चोखाघर कहा जाता है जो हर चीज को चोख-परख कर इस्तेमाल करते हैं, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो। पिछले २० सालों को छोड़ दिया जाए तो 'पुणे' की आबो हवा भारत की सबसे उत्तम क्षेत्रों में गिनी जाती है, इसे पेंशनरों का शहर कहा जाता था, मुंबई में काम करने वाले रिटायरमेंट के बाद 'पुणे' में आकर बसना पसंद करते थे। शिक्षा का हब और आईटी इंडस्ट्रीज बन जाने से यह कॉस्मापॉलिटन शहर बन चुका है। यहां हर धर्म व समाज के लोग बसे हुए हैं, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, समिश्रित संस्कृति दिखाई देती है। 'पुणे' का गणेश उत्सव पूरे विश्व में विख्यात है। यहां गणेश उत्सव के दौरान निकलने वाले ढोल पथक की पहचान विदेशों में भी है, दिवाली व अन्य पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाये जाते हैं। यहां भारत के हर शहर-राज्य के लोग बसे हैं जिनमें केरल, तमिलनाडु, गुजरात, पंजाब, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के लोग बसे हुए हैं, सभी की अपनी-अपनी सामाजिक संस्थाएं हैं जो पुणे के विकास में अपना योगदान देते हैं और 'पुणे' ने उनका विकास किया है। पर्यटन की बात की जाए तो यहां कई हेरिटेज स्थान हैं, पर यहां की सरकार द्वारा ध्यान न दिए जाने के कारण यह गुमनामी के अंधेरे में पड़े हुए हैं, कई प्रवासी लोगों को शनिवारवाडा बाजीराव मस्तानी फिल्म के बाद पता चला। यहां की नगरपालिका द्वारा प्रत्येक दिन 'पुणे' दर्शन के लिए बस निकाली जाती है जो 'पुणे' के प्रमुख स्थानों का दर्शन कराती है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भा' का अर्थ होता है प्रकाश और 'रत' यानी रहने वाला, अर्थात प्रकाश में लिप्त रहने वाला। 'भारत' नाम में ही हमें हमारे अस्तित्व की वास्तविक जानकारी मिलती है, अतः अपने देश की पहचान सिर्फ और सिर्फ 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

सत्येंद्रजी मूलतः राजस्थान के 'नागौर' जिले में स्थित 'निंबीजोधा' के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से 'पुणे' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'पुणे' में ही संपन्न हुई है। यहां आप गारमेंट के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आपको लेखन का भी शौक है, समय-समय पर लोकमत, सकाळ जैसे समाचार पत्रों में आपके द्वारा लिखित सामाजिक ऐतिहासिक और धार्मिक तत्कालीन मुद्दे प्रकाशित होते रहते हैं। 'पुणे' स्थित कई सामाजिक संस्थाओं में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। जय भारत!

मनोहर सारडा

पूर्व अध्यक्ष सांगली जिला माहेश्वरी सभा
छोटी खाटू निवासी-सांगली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३२५०५१५५५

मनोहरजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थान की छटा ही निराली है। यहां की संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, लोक कला आदि हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। पर्यटन की दृष्टि से भी यह बहुत ही उत्तम स्थान है, यहां कई ऐतिहासिक और भव्य हवेलियां है, जिसने पूरे भारत में अपनी विशेष पहचान बनाई हुई है। राजस्थान के निवासी आज देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं। व्यवसायिक क्षेत्र के साथ-साथ धार्मिक व सामाजिक क्षेत्रों में भी अपनी विशेष पहचान बनाई है, भले ही हम 'सांगली' महाराष्ट्र में बसे हैं, पर हमारी आत्मा राजस्थान में बसती है, इसीलिए जब भी हमें समय मिलता है हम राजस्थान पहुंच जाते हैं। राजस्थान के लोग दान-पुण्य, शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में भी अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं। सांगली में लगभग ४०० से अधिक परिवार महेश्वरी परिवार बसे हैं, साथ ही अग्रवाल, ओसवाल, नाई, कुम्हार व राजस्थान के अन्य समाज के लोग ही बसे हैं, सभी आज भी अपनी राजस्थानी संस्कृति तथा धर्म को संजोये हुए हैं। यहां हर पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, जिसमें सभी की सहभागिता रहती है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं, अपने देश की वास्तविक पहचान 'भारत' नाम से है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए। मनोहरजी मूलतः राजस्थान स्थित 'छोटी खाटू' के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र के 'सांगली' जिले में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'सांगली' में संपन्न हुई है, यहां आप हल्दी व किसमिस ट्रेडिंग के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहते हैं। सांगली जिले में स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय हैं। पूर्व में सांगली जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष रहे हैं। जय भारत!

सीए विष्णु भूतड़ा

डायरेक्टर जय महेश मंच
डीडवाना निवासी-पुणे प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९९७०७९६३३३

विष्णुजी अपनी कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पुणे' बहुत तेजी से बदला है पहले और आज के 'पुणे' में कई परिवर्तन आए हैं, पहले यहां चारों तरफ हरियाली ही रहती थी पर आज यह कंक्रीट का जंगल बन चुका है, हर तरफ मल्टी स्टोरेज बिल्डिंग्स नजर आती है, इसके बावजूद 'पुणे' का विकास बहुत तीव्र गति से होने से यहां आज हर सुविधा आसानी से उपलब्ध हो जाती है। शिक्षा के लिए भी क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, इसीलिए यहां शिक्षा ग्रहण करने देश ही नहीं विदेशों से भी विद्यार्थी आते हैं। आईटी क्षेत्र होने के कारण यहां शिक्षा और रोजगार के लिए देश के विभिन्न भागों से लोग यहां आकर प्रवासित हैं। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, लोग एक दूसरे से आपसी सामंजस्य के साथ निवास करते हैं। पर्यटन की बात की जाए तो यह एक ऐतिहासिक शहर है, आज भी यहां कई ऐतिहासिक स्थापत्य मौजूद हैं जिनमें सिंहगढ़, शनिवार वाडा, आगा खां पैलेस, लाल महल जैसे कई स्थान हैं। पानसेत व खड़कवासला डैम भी पर्यटन के लिए जाना जाता है, जहां पर्यटकों की तादाद हमेशा बनी रहती है। यहां के लोग आज भी अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को संजोए हुए हैं, यहां का गणपति उत्सव पूरे भारत ही नहीं विश्व में विख्यात है, हर पर्व यहां बड़े ही उत्साह से मनाया जाता है, ऐसे ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' यही नाम हमें हमारे इतिहास और संस्कृति से जोड़ता है,भारत नाम के उच्चारण में गर्व की अनुभूति होती है अतः अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

विष्णुजी मूलतः राजस्थान स्थित 'डीडवाना' के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र के 'सोनपेठ' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'सोनपेठ' में ही संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप 'पुणे' में बसे हुए हैं और चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। महेश प्रोफेशनल फोरम के सदस्य, जय महेश मंच के डायरेक्टर के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

श्याम साधुराम अग्रवाल

राष्ट्रीय सदस्य हैण्डलूम बोर्ड (वस्त्र मंत्रालय)
भोजापुर निवासी-पुणे प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२२५५७७८८

श्यामजी अपनी कर्मभूमि व जन्मभूमि पुणे की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पुणे' में बहुत परिवर्तन आ गया है, समय के अनुरूप 'पुणे' ने अपनी विशेषताओं को बनाए रखा है। पहले का 'पुना' उस समय के लिए अच्छा था और आज का 'पुणे' आज के अनुरूप उत्तम है। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, व्यवसाय, संस्कृति हर क्षेत्र में 'पुणे' उत्तम है। पहले यहां शिक्षा के लिए कुछ गिने-चुने ही शैक्षणिक संस्थान थे और आज नई टेक्नोलॉजी के अनुरूप कई शैक्षणिक संस्थान बने हुए हैं, इसलिए शिक्षा के लिए देश-विदेश से विद्यार्थी यहां आते हैं। व्यापारिक और औद्योगिक क्षेत्र में भी 'पुणे' ने अपना **शेष पृष्ठ ३३ पर...**

पृष्ठ ३२ से ... स्थान बनाया हैं। आज 'पुणे' कॉस्मापॉलिटन शहर बन चुका है, यहां हर धर्म समाज के लोग बसे हैं, सभी के बीच सामाजिक और व्यापारिक सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। यहां के लोग आज भी अपनी संस्कृति को संजोए हुए हैं, यहां का गणपति उत्सव विश्व प्रसिद्ध है, साथ ही नवरात्रि उत्सव, रावण दहन, गोविंदा उत्सव जैसे कई कार्यक्रम बहुत ही भव्य रुप में आयोजित किए जाते हैं, ऐतिहासिक और पर्यटन की दृष्टि से भी 'पुणे' बहुत ही उत्तम है। यहां शनिवार वाडा, आगा खां पैलेस, सिंहगढ़, पर्वती, सारसबाग का गणपति मंदिर, दगडूशेठ हलवाई का गणपति जैसे कई प्रमुख स्थल हैं जो 'पुणे' को और खास बना देते हैं। श्यामजी का परिवार मूलत: हरियाणा के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'पुणे' में संपन्न हुई है। यहां आप ट्रेडिंग के व्यवसाय से जुड़े हैं, यहां आप दो बार पिंपरी चिंचवड़ नगर पालिका के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं। बोसरी अग्रवाल समाज के भी पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। अग्रवाल समाज फेडरेशन के शिक्षा विभाग से जुड़े हैं, श्री वैष्णवी माता मंदिर के सदस्य हैं और पुणे इस्कॉन टेंपल से भी जुड़े हैं। जय भारत!

रामकिशोर जांगिड़

जिला अध्यक्ष जांगिड़ जिला सभा पुणे

नागौर निवासी-पुणे प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९९६०२५३२५३

रामकिशोरजी अपनी कर्मभूमि पुणे की विशेषताओं का वर्णन करते हुए बताते हैं कि पुणे भारत का अलग और अनोखा शहर है। यहां पर मध्यम परिवार भी लघु उद्योग से बड़े-बड़े व्यापार में समावेश है। यह महाराष्ट्र प्रदेश की शैक्षणिक राजधानी कहलाता है, यानी शिक्षा के क्षेत्र में पूरे भारत में एक अलग पहचान है इसकी, इससे छोटे से छोटे व्यापारी अपने बच्चों को उचित शिक्षा दिलवा कर बच्चों का भविष्य सवारते हैं। इस शहर में हवा और पानी स्वच्छ और मधुर है, इतना बड़ा मेट्रो शहर होने के बावजूद भी व्यक्ति यहां पर अपना जीवनयापन आसानी से कर लेता है। इस शहर की खास बात यह है कि यहां पर नारी सम्मान बहुत देखने को मिलता है, जिससे महिलाएं सुरक्षित व खुशहाल है। यहां पर प्रत्येक ६ से ७ किलोमीटर के क्षेत्र में धार्मिक स्थल एवं पर्यटन स्थल है, यहां पर हिंदू रिती-रिवाज में सभी पर्व व महापुरुषों की जयंतीयां बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है, जिससे हमारी धर्म संस्कृति एवं संस्कार जीवित रहते हैं। इस शहर में प्रवासी बंधुओं सभी जातियों के साथ-साथ जांगिड़ समाज का वर्चस्व बहुत अच्छा है। ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

रामकिशोरजी धर्म, देश के प्रति गाढ़ा प्रेम रखते हैं और कहते हैं कि भारत की पहचान केवल और केवल 'भारत' नाम से ही होनी चाहिए।

रामकिशोरजी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'चैनार' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'नागौर' में ही संपन्न हुई है। १९९६ से आप 'पुणे' में बसे हुए हैं और फर्नीचर व्यवसाय से जुड़े हैं। समाज में अनेकों पदों पर कार्य करते हुए सभी पुणे शहर वासियों के लिए समाज सेवाएं दे रहे हैं, मधुर वक्ता होने से बालिका शिक्षा, बेटी बचाओ जैसे अनेकों कार्य में विशेष मार्गदर्शन करते हैं। आप पुणे-लोहेगांव विश्वकर्मा मंदिर के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं, नागौर सेवा संस्था जिसके अंतर्गत ३६ कौम सम्मिलित है, के द्वारा जरूरतमंद भाइयों को आर्थिक व चिकित्सीय सहायता उपलब्ध करायी जाती है। अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा दिल्ली के अंतर्गत पुणे जिला जांगिड़ समाज के जिला अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। जय भारत!

महेश सोमानी

अध्यक्ष मराठवाड़ा माहेश्वरी ग्रुप

थांवला निवासी-पुणे प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४२२०३७४७९

महेशजी अपनी कर्मभूमि 'पुणे' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि सर्वप्रथम मेट्रो सिटी होने के बावजूद 'पुणे' का प्राकृतिक वातावरण और सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, यह एक सुरक्षित शहर के रूप में जाना जाता है। यहां हर धर्म समाज के लोग बसे हैं, इसके बावजूद यहां के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में निवास करते हैं। उद्योग व्यापार व रोजगार के लिए यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, इसके लिए यहां कई साधन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। पूरे महाराष्ट्र में 'पुणे' ने अपनी विशेष पहचान बनाई है, पूरे महाराष्ट्र के लोग किसी न किसी रूप में 'पुणे' से जुड़े हुए हैं। 'पुणे' में धार्मिक क्रियाकलाप भी बहुत बड़े पैमाने पर होता है, यहां का हर समाज किसी न किसी रूप में धार्मिक कार्यों में सक्रिय रहता है, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी अपनी अहम भूमिका निभाता है। यहां का गणेश उत्सव पूरे विश्व में विख्यात है, साथ ही यहां होली-दिवाली जैसे कई पर्व सामूहिक रूप से उत्साह पूर्वक मनाए जाते हैं। पर्यटन के लिए भी यह क्षेत्र उत्तम स्थान रखता है, पुणे के आसपास लोणावला, महाबलेश्वर जैसे हिल स्टेशन हैं जो प्राकृतिक सुंदरता से भरे हैं। 'पुणे' में माहेश्वरी समाज हर क्षेत्र में बसा हुआ है और सामाजिक संस्थाएं बनाई हैं, महेश्वरी प्रगति मंडल, माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल, महेश बैंक जैसी कई प्रमुख संस्थाएं पूरे जिले में कार्यरत हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पुणे' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही सराहनीय अभियान है, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

महेशजी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित थांवला के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र के परभणी जिले में स्थित 'सेलू' का निवासी है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। कई वर्षों से आप 'पुणे' में बसे हुए हैं यहां आप ज्वेलरी के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी प्रगति मंडल, महेश चॅरिटेबल फाउंडेशन, माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल जैसी कई संस्थाओं में भी सक्रिय हैं और मराठवाड़ा माहेश्वरी ग्रुप में अध्यक्ष के पद पर अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

प्राणी मात्र सेवा के लिए तत्पर निरंजन सेवाभावी संस्था पुणे

पुणे: मात्र ७ युवकों ने मिलकर १२ वर्ष पूर्व निरंजन सेवाभावी संस्था पुणे की स्थापना की थी, जिसका एकमात्र उद्देश्य वंचित, अनाथ, उपेक्षित बच्चों के चेहरे पर हंसी लाना। सातों लोग मिलकर अपने जेब खर्च से पैसा बचाते और जब भी 'आम' का सीजन आता है तो हापुस आम इन बच्चों को खिलाते। ऐसी मानवीय सोच के धनियों द्वारा से रखी हुई नींव, आज महाराष्ट्र में पुणे, बीड़, अहमदनगर के साथ पूरे महाराष्ट्र के लिए काम कर रही है। संस्था ने अभी तक ११५०० बच्चों का शैक्षणिक खर्च उठाया है, हर साल १५०० बच्चे, जो सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं, कुछ आत्महत्या ग्रस्त किसानों के बच्चे होते हैं, जिनकी माली हालत खराब है पर बच्चे काफी होनहार हैं, ऐसे बच्चों को पूरे साल भर लगने वाली शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराते हैं, जिनमें २ जोड़ी गणवेश, जूते, किताब आदि चीजें दी जाती हैं। संस्था में जुड़े हुए ४५ सदस्य हैं, कोई वकील, कोई इंजीनियर और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में से है। पिछले साल लगभग २००० बच्चों को सहायता प्रदान की गई। संस्था का मुख्य कार्य शिक्षा का क्षेत्र तो है ही, साथ ही वंचितों को मदद करना भी है। आम के सीजन में ५०० से ज्यादा बच्चों के लिए 'आंबा महोत्सव' का आयोजन करते हैं, जिसमें अनाथ व कुछ वंचित बच्चे सभी हापुस आम का आनंद लेते हैं। संस्था ने और एक कदम आगे बढ़ाते हुए महिला आत्मनिर्भरता को भी अपना अभियान बनाया है, जिसके तहत डेढ़ सौ से भी ज्यादा निराधार महिलाओं को ऑटोमेटेड आटा चक्की दी गई है, उनको व्यवसाय करने की ट्रेनिंग भी दी जा रही है, जिससे महिला अपने परिवार के लिए मासिक १० से १५ हजार कमा रही है, ऐसे अनेक क्षेत्रों में संस्था महाराष्ट्र में काम कर रही है। संस्था के अध्यक्ष डॉ. नवनीत मानधनी जो खुद एक शिक्षाविद हैं, सचिव सीए दुर्गेश जी चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं।

निरंजन सेवाभावी संस्था
निरंजन सेवा, निरंतर सेवा, निःस्वार्थ सेवा.

पुणे का माहेश्वरी परिवार पश्चिम

पुणे: 'माहेश्वरी परिवार' की स्थापना सन् १९९९ में समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों ने की। संस्था का मूल उद्देश्य था कि 'पुणे' के पश्चिम भाग में जो भी माहेश्वरी परिवार बसे हुए हैं या बहुत से नए परिवार भारत से पुणे में व्यवसाय, नौकरी, शिक्षण के लिए आए हैं, उन सबको एक साथ जोड़ना और अपने तीज़-त्यौहार को साथ मिलकर मनाना।

इसके लिए 'माहेश्वरी परिवार' साल में दो कार्यक्रम निश्चित रूप से आयोजित करता है, जैसे 'दिवाली मिलन' और होली मिलन। 'दिवाली मिलन' के उपलक्ष में छप्पन भोग का आयोजन किया जाता है और साथ में रुचि भोज का भी आयोजन होता है। 'होली मिलन' के दिन हम होलिका दहन का आयोजन करते हैं, उसी के साथ छोटे बच्चों के ढूंढ पूजने का भी आयोजन होता है।

इन दोनों कार्यक्रमों के माध्यम से हम 'पुणे' पश्चिम में रहने वाले माहेश्वरी परिवार एक साथ मिलते हैं और अपने संबंधों को मजबूत बनाते हैं। 'माहेश्वरी परिवार पश्चिम' का अगला उद्देश्य है कि 'पुणे' के पश्चिम विभाग में एक माहेश्वरी भवन का निर्माण हो, जिससे पश्चिम विभाग में रहने वाले माहेश्वरी परिवारों को उसका लाभ मिल सके। विदित हो कि माहेश्वरी परिवार पश्चिम में करीब ४०० परिवार सदस्य हैं। जय महेश! जय भारत!

माहेश्वरी परिवार पश्चिम (पुणे) द्वारा धूमधाम से होली मिलन संपन्न

पुणे: माहेश्वरी परिवार पश्चिम (पुणे) द्वारा हरसाल की तरह इस साल भी होली मिलन रामासामा कार्यक्रम सोमवार ता. ०६/०३/२०२३ को माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल संचालित कोथरूड स्थित महेश विद्यालय में बड़े ही उत्साह के साथ संपन्न हुआ। पधारे हुए सभी सज्जनों को तिलक तथा गुलाल लगाकर ठंडाई देकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में पुजा तथा महाप्रसाद के यजमान बिल्डर्स ॲन्ड डेव्हलपर्स बानेर के नितीन करवा रहे इन्हीं के कर कमलों द्वारा होली की सपत्नीक पुजा करवाई गई, बाद में ३ बच्चों की डूंड कि गई। कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष वसंत राठी माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल के अध्यक्ष अतुल लाहोटी, सचिव सौ. सुशिलाजी राठी, अश्विन चांडक, रमेश धूत तथा विद्यालय समिती के अध्यक्ष सचिन मंत्री उपस्थित थे। यजमान नितीन करवा का सम्मान अध्यक्ष मनिष कासट तथा पूर्व अध्यक्ष सुरेश नावंदर ने किया।

कार्यक्रम में संस्था के सदस्य तथा आमंत्रितगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभी ने महाप्रसाद का लाभ लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में अध्यक्ष मनिष कासट के साथ उपाध्यक्ष मनोज संवर, सचिव के.सी. चांडक, कोषाध्यक्ष दिपक काबरा, सदस्य सी.ए. नंदकिशोर माल्लाणी, मुरलीजी सारडा, रामचंद्र मंत्री, राहुल धूत, आनंद जखोटिया तथा महिला समिती के सभी सदस्याओं ने परिश्रम लिया। अध्यक्ष मनिष कासट संस्था के प्रति सभी का आभार व्यक्त किया, यह जानकारी पूर्व अध्यक्ष सुरेश नावंदर ने 'मैं भारत हूँ' को भेजी है।

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

Sunita Bubana
Mob: 99038 56687
Flat No. 4B, Viraj Complex, 240/20, G.T. Road,
Ganguly Street, Belur, Howrah,
West Bengal, Bharat-711202

सांगवी परिसर महेश मंडल पुणे

सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक सभी प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन मंडल की ओर से किया गया है और करते रहते हैं।

१) सामाजिक कार्य

मंडल की ओर से गत ११ वर्ष से हर साल दो रक्तदान शिबीर का आयोजन किया गया, इस वर्ष १ मई २०२२ को संस्था का २५ वां रक्तदान शिबीर का आयोजन किया गया, रक्तदान शिबीर में २३४ रक्तदाता सम्मिलित हुए थे। ४ दिसम्बर २०२२ को २६ वॉ रक्तदान शिबीर का आयोजन किया गया था, इस रक्तदान शिबीर में १७९ रक्तदाता सम्मिलित हुए थे।

२) शैक्षणिक कार्य

जुनी सांगवी स्थित मराठी प्राथमिक शाळा के जरूरतमंद ३१५ विद्यार्थियों को शैक्षणिक सामग्री का वितरण किया गया।

औरंगाबाद स्थित चेतना फाउंडेशन आश्रम के विद्यार्थी को पढने हेतू ५ संगणक भेंट किये गये।

३) सांस्कृतिक कार्य

'महेश नवमी' महेश्वरी समाज की उत्पत्ति दिवस के रूप में एक उत्सव पर्व होता है। यह समाज के सभी महेश्वरी सदस्य को जोड़ने के लिये सांगवी परिसर महेश

मंडल की ओर से खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। 'महेश नवमी' के दिन प्रातः प्रभात फेरी निकलती है और महेश्वरी चौक में भगवान महेश की पूजा अर्चना की जाती है।

४) धार्मिक कार्य

मंडल की ओर से समाज संगठित रहे, इसलिये विविध धार्मिक कार्य के साथ अन्नकुट महाप्रसाद का आयोजन किया जाता है।

कोलकाता में गणगौर मेला का आयोजन

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए अभियान की सफलता के लिए 'मैं भारत हूँ' के न्यूज़ चैनल परिवार ने कोलकाता में स्थापित, माहेश्वरी महिला समिति द्वारा आयोजित गोकुल बैंक्वेट्, लेक टाउन में १६-१७ मार्च २०२३ को अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन के पूर्वांचल संयुक्त मंत्री श्रीमती निशा लड्ढा के कर कमलों द्वारा 'गणगौर मेला' का उद्घाटन कार्यक्रम संपन्न हुआ। माहेश्वरी समाज की 'महिलाओं के द्वारा-महिलाओं के लिए' मेला में विभिन्न तरह की ज्वेलरी, पोशाक, साज श्रृंगार की स्टाल लगाई गई थी। समिति के अध्यक्ष श्रीमती वर्षा डागा, मंत्री कविता सादानी, ज्वाइन्ट कन्वेनर नितिशा बागड़ी रहीं। आयोजित 'गणगौर मेला' के प्रायोजक अनवील, रूपश्री ज्वेलर्स, कम्फोर्ट लेडी, माउस टेक व दैनिक सन्मार्ग रहे। मेला को कैमरे द्वारा पिंकी व रवि शर्मा ने संकलन किया, जिसे 'मैं भारत हूँ' चैनल के यूट्यूब में देखा जा सकता है। जय भारत!

भारत मॉ की समृद्धि के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं
- राम बांगड संस्थापक, अध्यक्ष रक्ताचे नाते ट्रस्ट

पुणे: किसी को भी किसी भी ग्रुप के रक्त की जरुरत लगती है, तो सबसे पहले मरिज का रिश्तेदार विश्वास से 'रक्ताचे नाते ट्रस्ट' के अध्यक्ष राम बांगड से संपर्क करता है।

श्री बांगड़ ने 'मैं भारत हूँ' पत्रिका को बताया कि रोजाना पचास से ज्यादा लोग संपर्क करते हैं, ज्यादातर पुणे के मिलिटरी हॉस्पिटल, बड़े हॉस्पिटल से पुणे तथा संपूर्ण महाराष्ट्र से होते हैं।

जरुरत के हिसाब से रक्तदाता, प्लेटलेट्स डोनर, भेजने का काम ट्रस्ट करती हैं, हर महिना ८ से १० ब्लड डोनेशन शिबिर लगाए जाते हैं।

पुणे, नगर, शिरूर तथा आसपास के गांव में भी कॅम्प का आयोजन किया जाता है, जिनके पास पैसे की कमी होती हैं, ट्रस्ट द्वारा फ्री ब्लड उपलब्ध कराने का कार्य किया जाता है। विदित हो कि ट्रस्ट का यह मानव हित कार्य पिछले २५ साल से चल रहा है। वर्तमान में हर शहर और गॉव में ट्रस्ट के कार्यकर्ता हैं। ट्रस्ट के साथ संपूर्ण भारत से ५०००० रक्तदाता जुड़े हैं। ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष राम बांगड हैं, जिन्होंने स्वयं आज तक १७५ बार रक्तदान किया है, आपके परिवार में सभी रक्तदान करते हैं, बेटे, बेटी तथा जवांई ने मिल कर रक्तदान २५८ बार किया है। २५० से ज्यादा पुरस्कार बांगड़ जी को प्राप्त हुए हैं। रामजी बांगड़ कहते हैं :

'देश के लिये हम सभी समर्पित हैं'

'भारत मॉ के लिये कभी भी कहीं भी कुछ भी करने को हम तैयार हैं।

जय भारत!

महाशिवरात्री के पावन पर्व पर हनुमान चालिसा पाठ का हुआ आयोजन

पुणे के श्री सालासर हनुमान चालिसा मंडल पिछले १६ साल से महाशिवरात्री पर्व से हनुमान जयंती तक हर रोज हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं। इस वर्ष दि. १८ फरवरी २०२३ से महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर धार्मिक उत्सव की शुरुवात श्री माहेश्वरी मुरलीधर मंदिर, पुणे में भक्तिपूर्ण वातावरण में हुयी। हर वर्ष यह पावन उत्सव भक्तों के घर में होता था, लेकिन पिछले सात साल से यह भक्तिपूर्ण उत्सव में ज्यादा लोग शामिल होने के कारण पुणे के विभिन्न मंदिरों में जैसे, श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई मंदिर, महालक्ष्मी मंदिर, सारसबाग गणपती मंदिर, मारुती मंदिर आदि में आयोजन किया जाता है।

उत्सव में हर रात ९.३० बजे पाठ की शुरुवात होती है। ग्यारह बार हनुमान चालिसा की विभिन्न धून, ताल, सुर में पठन किया जाता है। आरती, मंत्र पुष्पांजलि उत्सव हर दिन किया जाता है। आरती में इकठ्ठा हुई राशि का उपयोग होम-हवन के लिए किया जाता है, उसमें से कुछ राशी का उपयोग सामाजिक कार्यों के लिए भी किया जाता है। हर रोज पाठ में ३५०-४०० भक्तगण शामिल होते हैं।

अंधशाला, अनाथालय, वृद्धाश्रम के लोगों को कपड़े व अन्य खाद्य सामग्री के रुप मदद की जाती है। पंढरपूर के आषाढी उत्सव के समय वारकरी लोगों की सेवा की जाती है। युवकों के लिए इंस्पिरेशनल तथा मोटिवेशनल लेक्चर आयोजित किए जाते हैं। गौमाता के खाने की चीजें गौशाला को दी जाती है। ब्लड डोनेशन के शिविरों का भी आयोजन किया जाता है, इस साल २ अप्रैल २०२३ को ब्लड डोनेशन शिवीर का आयोजन किया जाना है, इस तरह अन्य कई सामाजिक कार्य मंडल द्वारा किए जाते हैं।

४७ दिनों के उत्सव में छोटे बच्चों से लेकर बुजुर्गो तक सभी शामील होते हैं, उत्सव की समाप्ती हनुमान जयंती के दिन भव्य होम हवन से की जाती है। समाज में प्रतिष्ठावान समझे जानेवाले सभी लोग इस उत्सव में शामिल होते हैं। हनुमान चालीसा का ज्यादा से ज्यादा प्रचार और प्रसार हो और लोगों की सेवा हो यह इस उत्सव का मुख्य उद्देश्य है। **- सर्वेश संजय चांडक**

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

परस्परोपग्रहो जीवानाम

पधारो म्हारे देश
पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मेरा राजस्थान
सम्पादक : विजय कुमार जैन
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ
मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना
सम्पादक
बिजय कुमार जैन
उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)
पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com
विशेष छूट
विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त
वार्षिक शुल्क १,१११/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-
भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

Postal Registration Number - MCN/294/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2021-23
Published on 19th March 2023 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेषित करती पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

आपके हाथों में है
पुणे भाग-3

आगे भी हर महिने

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर पूरे साल मैं भारत हूँ पत्रिका मुफ्त

मात्र रु. १००/-में, प्रति महिना आपके द्वार

भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९.
दूरभाष- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना: www.mainbharathun.co.in

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
Remove India Name From the Constitution

नीम लगायें पर्यावरण बचाये
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-२८५० ९९९९, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574